Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

**अल्लाह तआला का आदेश**

رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۟ وَاغْفِرْ لَنَا ۟ وَارْحَمْنَا ۟ اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ○

(सूरत अल-बक़रा आयत :287)

**अनुवाद:** और हे हमारे रब्ब, हम पर कोई इस प्रकार का न डाल जो हमारी ताकत से बढ़ कर हो और हमें क्षमा कर दे तू ही हमारा मौला है। अत: हमें काफिर क़ौम के मुकाबला में सहायता प्रदना कर।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 3

साप्ताहिक क़ादियान

# बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 50

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

5 रबीउस्सानी 1440 हिजरी कमरी 13 फत्ह 1397 हिजरी शमसी 13 दिसम्बर 2018 ई.

**अख़बार-ए-अहमदिया**

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

**सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया कि कश्ती नूह में हमारी शिक्षा का जो भाग है वह ज़रूर हर अहमदी को पढ़ना चाहिए बल्कि पूरी कश्ती नूह ही पढ़ें।**

**क़ुर्आन शरीफ़ में कहां लिखा है कि धर्म के लिए बल-प्रयोग उचित है, बल्कि ख़ुदा ने तो क़ुर्आन शरीफ़ में उल्लेख किया है لَآ اِكۡرَاهَ فِى الدِّيۡنِ- "ला इकराहा फ़िद्दीन" (अलबक़रह-257)धर्म में बल प्रयोग नहीं है।**

**जिन लोगों से आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय युद्ध किए गए थे वे युद्ध धर्म को बलपूर्वक प्रसारित करने हेतु नहीं थे, बल्कि वे युद्ध या तो दण्ड स्वरूप थे अर्थात् लोगों को दण्ड देना लक्ष्य था, जिन्होंने अधिकांश मुसलमानों को क़त्ल कर दिया और कुछ को मातृभूमि से बाहर निकाल दिया था और अत्यन्त अत्याचार किया था।**

## *उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम*

आप लोगों की आस्थानुसार जिस कार्य हेतु मसीह इब्ने मरयम आकाश से आएगा अर्थात् महदी से मिलकर लोगों को बलपूर्वक मुसलमान करने के लिए युद्ध करेगा। यह एक ऐसी आस्था है जो इस्लाम को बदनाम करती है। क़ुर्आन शरीफ़ में कहां लिखा है कि धर्म के लिए बल-प्रयोग उचित है, बल्कि ख़ुदा ने तो क़ुर्आन शरीफ़ में उल्लेख किया है-

لَآ اِكۡرَاهَ فِى الدِّيۡنِ

"ला इकराहा फ़िद्दीन" (अलबक़रह-257)

धर्म में बल प्रयोग नहीं है। फिर मसीह इब्ने मरयम को बल प्रयोग का अधिकार क्योंकर दिया जाएगा। यहां तक कि वह उनसे इस्लाम को स्वीकार करने या उन्हें क़त्ल कर देने के अतिरिक्त उन से उनकी जान की रक्षा करने के बदले में कोई टैक्स तक स्वीकार नहीं करेगा। क़ुर्आन शरीफ़ की यह शिक्षा किस स्थान किस अध्याय और किस सूरह [1] में है। सम्पूर्ण क़ुर्आन बारम्बार कह रहा है कि धर्म में बल प्रयोग नहीं, और स्पष्ट कर रहा है कि जिन लोगों से आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय युद्ध किए गए थे वे युद्ध धर्म को बलपूर्वक प्रसारित करने हेतु नहीं थे, बल्कि वे युद्ध या तो दण्ड स्वरूप थे अर्थात् लोगों को दण्ड देना लक्ष्य था, जिन्होंने अधिकांश मुसलमानों को क़त्ल कर दिया और कुछ को मातृभूमि से बाहर निकाल दिया था और अत्यन्त अत्याचार किया था। जैसा कि ख़ुदा का कथन है-

اُذِنَ لِلَّذِيۡنَ يُقٰتَلُوۡنَ بِاَنَّهُمۡ ظُلِمُوۡا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ عَلٰى نَصۡرِهِمۡ لَقَدِيۡرُ

"उज़िना लिल्लज़ीना युक़ातलूना बिअन्नहुम ज़ुलिमू व इन्नल्लाहा अला नसरिहिम लक़दीर" (अलहज्ज-40)

अर्थात् "मुसलमानों को जिन से ख़ुदा को न मानने वाले शत्रु युद्धरत हैं, अत्याचार सहन करने के कारण उन्हें मुकाबला करने की आज्ञा प्रदान की गई और ख़ुदा उनकी सहायता करने की शक्ति रखता है"। या वे युद्ध थे जो अपनी सुरक्षा हेतु किए थे। अर्थात् जो लोग इस्लाम को मिटाने के लिए आगे बढ़ते थे या अपने देश में इस्लाम के प्रचार को बलपूर्वक रोकते थे, उनसे अपने निजी सुरक्षा के अधिकार का प्रयोग करते हुए या देश में स्वतंत्रता हेतु युद्ध किए जाते थे। इन तीन परिस्थितियों के अतिरिक्त युद्ध नहीं किया, बल्कि इस्लाम ने अन्य क़ौमों के अत्याचार को इतना सहन किया है कि जिसका किसी अन्य क़ौम में उदाहरण नहीं मिलता। फिर यह ईसा मसीह और महदी साहिब कैसे होंगे जो आते ही लोगों को क़त्ल करना आरम्भ कर देंगे। यहां तक कि किसी अहलेकिताब से भी टैक्स स्वीकार नहीं करेंगे और आयत-

حَتّٰى يُعۡطُوا الۡجِزۡيَةَ عَنۡ يَّدٍ وَّهُمۡ صٰغِرُوۡنَ

"हत्ता योतुल जिज़्यता अंय्यदिन व हुम साग़िरून" (अत्तौब:-29)

को भी रद्द कर देंगे। ये इस्लाम के कैसे समर्थक व सहायक होंगे कि आते ही क़ुर्आन की उन आयतों को भी रद्द कर देंगे जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समय में भी रद्द नहीं हुईं। इतने बड़े इन्क़िलाब से भी ख़त्मे नुबुव्वत में कोई अन्तर नहीं आएगा। इस युग में जबकि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के काल पर तेरह शताब्दियाँ गुज़र गईं और इस्लाम स्वयं आन्तरिक तौर पर तिहत्तर समूहों में विभाजित हो गया, सच्चे मसीह का कर्तव्य यह होना चाहिए कि वह प्रमाणों के साथ हृदयों पर विजय प्राप्त करे न कि तलवार के साथ और सलीबी आस्था को वास्तविक और सत्य प्रमाणों द्वारा तोड़ दे न कि यह कि वह उन सलीबों को तोड़ता फिरे जो चांदी, सोने, पीतल या लकड़ी से बनाई जाती हैं। यदि तुम बल का प्रयोग करोगे तो तुम्हारा बल-प्रयोग करना इस बात का पर्याप्त प्रमाण है कि तुम्हारे पास अपनी सच्चाई पर कोई तर्क नहीं। [2]

**हाशिया 1:-** यदि कहो कि अरबों के लिए भी आदेश था कि बल प्रयोग करके मुसलमान बनाए जाएँ। यह विचार क़ुर्आन शरीफ़ से कदापि सिद्ध नहीं होता बल्कि यह सिद्ध होता है कि चूंकि समस्त अरब ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कठोर यातनाएं दी थीं और आपके अनुयायिओं और ईमान लाने वाली स्त्रियों को क़त्ल कर दिया था। और जो शेष रह गए उनको पलायन करने पर विवश कर दिया था। इसलिए वे समस्त लोग जो क़त्ल के अपराधी या उस जुर्म सहयोगी थे, वे सब परमेश्वर की दृष्टि में अपने रक्तपात के उप-लक्ष्य में रक्तपात के योग्य हो चुके थे। उनके विषय में बदले के तौर पर उनके क़त्ल का आदेश था। परन्तु सर्वाधिक दयालु, कृपालु आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर से यह सुविधा प्रदान की गई कि यदि उनमें से कोई मुसलमान हो जाए, तो उसका पूर्व अपराध जिसके उपलक्ष्य वह मौत के दण्ड

**शेष पृष्ठ 8 पर**

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

# तहरीक जदीद में, क़ादियान पूरे भारत की जमाअतों में अव्वल

## मुबारक कादियान वालों को मुबारक!

हुज़ूर पुर नूर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का हर ख़ुत्बा पूरी दुनिया में बहुत ध्यान से सुना जाता है लेकिन तहरीक जदीद और वक्फ जदीद के ख़ुत्बों को सुनने का जोश और अन्य ख़ुत्बों से कुछ ही आनंद देता है। इस के कई कारण हैं जैसे: * हुज़ूर पुर नूर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ इस ख़ुत्बा में दुनिया भर की विभिन्न जमाअतों की वित्तीय कुरबानी के बेहद ईमान वर्धक घटनाओं को सुनाते हैं। * पूरी दुनिया से पूरे वर्ष की अहमदियों की वित्तीय कुरबानी की घोषणा करते हैं। * पहले दस स्थानों पर आने वाले देशों के नाम वर्णन करते हैं। * सब से अधिक कुरबानी करने वाले ज़िलों तथा क्षेत्रों के नामों का वर्णन करते हैं। * पहले दस स्थानों पर आने वाली जमाअतों के नाम भी बताते हैं। * प्रति व्यक्ति अदायगी के अनुसार दस देशों के नाम वर्णन करते हैं। * पूरी दुनिया में तहरीक जदीद में शामिल होने वाले अहमदियों की संख्या बताते हैं। * पिछले साल की तुलना में वित्तीय कुरबानी में वृद्धि और शामिल होने वालों की संख्या में वृद्धि के बारे में भी बताते हैं। ये वे चीजें हैं जो तहरीक जदीद तथा वक्फे जदीद के ख़ुत्बों को बहुत ही ईमान वर्धक बनाते हैं।

इस साल हुज़ूर पुर नूर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने कैमरून, गैम्बिया, बेनिन, भारत, तंज़ानिया, रशिया, माली, बोर्कीना फासो, जर्मनी, आइवरी कोस्ट, इंडोनेशिया, यू.के, बुरुंडी, कनाडा, कोंगो ब्राज़ावेल और पाकिस्तान से वित्तीय कुरबानी के बेहद रोमांचक और ईमान वर्धक घटनाओं को सुनाया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दिनांक 9 नवंबर 2018 ई को तहरीक जदीद के 85 वें वर्ष की शुरुआत की मुबारक घोषणा फरमाई और 84 वें साल यानी वर्ष 2017 ई के समग्र वित्तीय कुरबानी की घोषणा करते हुए फरमाया कि "अल्लाह तआला ने श्रद्धालुओं को एक करोड़ सत्ताईस लाख तिरानवे हज़ार पाऊंड कुरबानी करने की तौफीक़ प्रदान की। अल्हम्दो लिल्लाह।"

इस साल, सबसे अधिक वित्तीय कुरबानी करने वाले देशों के नाम इस प्रकार हैं। (1) पाकिस्तान। (2) जर्मनी। (3) ब्रिटेन। (4) अमेरिका। (5) कनाडा। (6) भारत। (7) ऑस्ट्रेलिया। (8) मध्य पूर्व का एक देश। (9) इंडोनेशिया। (10) घाना (11) मध्य पूर्व का एक और देश।

दस प्रांतों के नाम, जो भारत में सबसे ज्यादा वित्तीय कुरबानी करने वाले हैं, इस तरह हैं। (1) केरल (2) कर्नाटक (3) तमिलनाडु (4) तेलंगाना (5) जम्मू-कश्मीर (6) ओडिशा (7) पंजाब (8) बंगाल (9) दिल्ली (10) महाराष्ट्र।

वित्तीय कुरबानी के आधार पर भारत की दस बड़ी जमाअतों के नाम इस प्रकार हैं। (1) कादियान (पंजाब) (2) हैदराबाद (तेलंगाना) (3) पत्त परियम (केरल) (4) चेन्नई (तमिलनाडु) (5) कालीकट (केरल) (6) बंगलौर (कर्नाटक) (7) कोलकाता (बंगाल) (8) पेंगाडी (केरल) (9) केनानूर टाऊन (केरल) (10) यादगीर (कर्नाटक)

प्रति व्यक्ति अदायगी के मामला में दस देशों के नाम इस प्रकार हैं: (1) स्विट्जरलैंड। (2) संयुक्त राज्य अमेरिका (3) यू.के (4) ऑस्ट्रेलिया। (5) सिंगापुर। (6) स्वीडन। (7) बेल्जियम। (8) जर्मनी (9) कनाडा। (10) फिनलैंड।

इस जगह हम यह उल्लेख करना चाहेंगे कि वर्ष 2018 ई में सारे भारत में जमाअतों में सबसे अधिक कुरबानी के आधार कादियान नंबर एक पर रही इसकी हमें बहुत ख़ुशी है। अखबार बदर 11 फरवरी 2016 में तहरीक जदीद के संदर्भ में हमने लिखा था कि " कादियान को चाहिए कि वह मसीह मौऊद की बस्ती होने के नाते सबसे आगे निकलने की कोशिश करे।" उस साल यानी वर्ष 2016 ई में कादियान का नंबर पांचवां था अगले साल यानी वर्ष 2017 ई में अल्लाह तआला की कृपा से कादियान को नंबर 3 पर आने की तौफ़ीक़ मिली जो बेशक प्रशंसा योग्य बात है तथा बहुत ख़ुशी की बात है। वर्ष 2017 ई में जबकि कादियान सारे भारत की जमाअतों में तीसरा स्थान हासिल किया था हम ने यह लिखा था कि "हम फिर यही कहेंगे कि कादियान को मसीह मौऊद की बस्ती होने के नाते नंबर 1 पर आने की कोशिश करनी चाहिए। " और अल्लाह तआला का करना इस प्रकार हुआ कि केवल अपने फज़्ल से कादियान को वर्ष 2018 ई में नंबर एक पर आने की तौफ़ीक़ दी। अल्हम्दो लिल्लाह। हुज़ूर अनवर ने अप्रत्याशित रूप से पहले स्थान पर जैसे ही कादियान का नाम लिया हमारी ख़ुशी का कोई ठिकाना न रहा। कादियान ने दो वर्षों के अंदर पांचवें स्थान से उठाकर ख़ुद को नम्बर अव्वल पर खड़ा किया इस के लिए सभी कादियान के लोग बधाई के हकदार हैं और विशेष रूप से वे दोस्त जिन्होंने तहरीक जदीद की वित्तीय कुरबानी में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया और वह मुहस्सलीन भी जिन्होंने बहुत कड़ी मेहनत की। कादियान के लोग इस उपलब्धि पर बहुत ख़ुश हैं और इस ख़ुशी के आवाज़ सुनने को मिल रही है। कादियान वालों पर अब यह दायित्व है कि वह इस स्थिति को बनाए रखें।

हम हैदराबाद का वर्णन भी बहुत प्रसन्नता तथा ख़ुशी से करते हैं कि वह पिछले साल चौथे स्थान पर थे, अब उन्हें दूसरी स्थिति मिली है। हैदराबाद वाले भी बधाई के पात्र हैं। कुछ अन्य जमाअतों के स्थान का ज़िक्र करना चाहते हैं। चेन्नई 2013 ई और 2014 ई में नंबर 9 पर नज़र आती है। फिर 3 साल तक पहली दस स्थिति में उसका कोई नाम नहीं है और वर्ष 2018 ई में अचानक उसका नाम चौथे स्थान में आना बेशक चौंकाने वाली बात है, इस लिहाज से चेन्नई वाले सराहनीय हैं। यादगीर साल 2013 ई में हमें 8 वें नंबर पर नज़र आता है और फिर अगले चार साल तक पहली दस स्थिति में उसका कोई नामोनिशान नहीं मिलता और वर्ष 2018 ई में वह दूर क्षितिज पर उगते चांद की तरह प्रकट हुआ है, उम्मीद है आगे चांद और स्पष्ट होगा।

जमाअतों के बाद अब हम कुछ प्रांतों का ज़िक्र करते हैं। केरल ने बेहद अनिश्चित परिस्थितियों में अपनी पहली स्थिति बनाए रखी है। बाढ़ के कारण अहमदियों में से कई को क़ाफी नुकसान उठाना पड़ा। अल्लाह तआला उन के नुकसान को पूरा करे और उन के मालों में पहले से कहीं ज्यादा बरकत प्रदान फरमाए। आमीन।

तमिलनाडो जो पिछले साल 5 वें स्थान पर था अब उसने तीसरा स्थान हासिल किया है इस लिए तमिलनाडो वाले बधाई के हकदार हैं वैसे देखा जाए तो वर्ष 2014 ई और 2015 ई में तमिलनाडो की दूसरी स्थिति थी, वर्ष 2016 ई में यह चौथी और 2017 ई में पांचवीं स्थिति में पहुंचा। और जम्मू-कश्मीर, जो तीसरे स्थान पर था, अब पांचवें स्थान पर पहुंच गया है। इन दोनों प्रांतों का स्थिति के मामले में आपस में तबादला हुआ है। कर्नाटक जो पहले चौथे और तीसरे स्थान पर होता था अब तीन साल से लगातार अपनी दूसरी दूसरी स्थिति बनाए रखी है।

अन्त में हम जमाअत अहमदिया भारत के सदस्यों की सेवा में निवेदन करते है कि नए वादे पिछले वादों से कम से कम दस प्रतिशत की वृद्धि के साथ लिखवाएं, जो जितना अधिक वृद्धि के साथ लिखवाऐगा, वे निश्चित रूप से अधिक इनाम के योग्य होगा। अल्लाह तआला ईमानदारी से की गई कुरबानी को कभी नष्ट नहीं करता है वह इसके बदले में इस दुनिया में भी अदा करता है, और इसके बाद का इनाम उससे भी अधिक है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने प्रति व्यक्ति अदायगी की दृष्टि से दस देशों के नाम बताए इस में भारत का कोई उल्लेख नहीं है। इस का अर्थ है कि अभी वृद्धि की बहुत अधिक संभावना है। भारत का नाम प्रति व्यक्ति अदायगी के मामले में सबसे अधिक कुरबानी वाले दस देशों में आना चाहिए। यह तभी होगा जब हम अपने चन्दों में वृद्धि करेंगे।

हमें इस बात की भी चिंता होनी चाहिए कि दुनिया भर के देशों में भारत जो कई सालों से एक स्थान पर खड़ा है, अपने चन्दों में उल्लेखनीय वृद्धि के साथ इसे ऊपर ले जाने की कोशिश करें। हम इस तरह कर सकते हैं केवल ध्यान और इरादा की ज़रूरत है। अल्लाह तआला हमें इस देश को जिस में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम पैदा हुए कुरबानी और तरक्की के हर क्षेत्र में सब से आगे खड़ा होने की तौफीक़ प्रदान करे आमीन।

☆ ☆ ☆

☆ ☆

# ख़ुत्बः जुमअः

## आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के छह और सहाबा हज़रत उमेर बिन अबी वक़ास, हज़रत कत्बह बिन आमिर अंसारी, हज़रत शुजा बिन वहब, हज़रत श्मास बिन उसमान, हज़रत अबु अबस बिन जबर और हज़रत अबु अक़ील बिन अब्दुल्लाह अंसारी रिज़वानुल्लाह अलैहिम की लघु जीवनी और सीरत की चर्चा।

## मुहतरम मौलाना अब्दुल अज़ीज़ सादिक़ साहिब मुरब्बी सिलसिला बांग्लादेश की वफात।
## आदरणीय मुहम्मद ज़फ़रुल्लाह साहिब पुत्र आदरणीय बिशारत अहमद साहिब की सय्यदवाला ज़िला ननकाना में शहादत।
## मरहूमीन का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

**ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 31 अगस्त 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.**

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ
اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔
غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत उमेर बिन अबी वक़ास एक बदरी सहाबी थे जिनका पितृत्व अबू वक़ास मालिक बिन उहेब था। उनकी शहादत जंग बदर 2 हिजरी में हुई। हज़रत उमेर रज़ियल्लाहो अन्हो हज़रत साद बिन अबी वक़ास के छोटे भाई थे और प्रारंभिक मुसलमानों से थे। आप की माँ का नाम हुमना पुत्री सुफियान था। आपके संबंध क़ुरैश के कबीला बनू ज़हरह से था और जैसा कि उल्लेख हुआ बदर की लड़ाई में उन्होंने भाग लिया और वहीं उनकी शहादत हुई। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमेर और अम्र बिन मुआज़ के बीच भाईचारा स्थापित फरमाया थी।

(अल्इस्तेयाब जिल्द 3, पृष्ठ 294 उमेर बिन अबी वक़ास मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2002 ई), (अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 79 उमेर बिन अबी वक़ास मुद्रित दारुल अहया अत्तुरास अल-अरबी बैरूत 1996 ई) कुछ का मानना है कि हज़रत उमेर बिन अबी वक़ास और हज़रत ख़बेब बिन अदि के बीच भाईचारा स्थापित फरमाया था। (एयनुल असर जिल्द पृष्ठ मुख्य 232 अध्याय ज़िक्रुल मुआख़ाजात मुद्रित दारुल कलम बैरूत 1993)

उनकी शहादत की घटना और जंगे बदर में शामिल होने का ज़िक्र करते हुए सीरत ख़ात्मन्नबिय्यीन में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने इस तरह लिखा है कि मदीना से थोड़ी दूर निकल कर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने डेरा डालने का आदेश दिया और फौज की समीक्षा की। कम उम्र बच्चे जो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शौक में साथ चले आए थे उन्हें वापस भेजा गया। साद बिन अबी वक़ास के छोटे भाई उमेर भी छोटी उम्र के थे। बच्चे थे। उन्होंने जब बच्चों की वापसी का आदेश सुना तो छावनी में इधर-उधर छुप गए लेकिन अंत उनकी बारी आई और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको वापसी का आदेश दिया। यह आदेश सुनकर उमेर रोने लग गए और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फिर उनके असामान्य शौक को देख कर उन्हें बदर में शामिल होने की अनुमति दी।

(उद्धरित सीरत ख़ात्मन्नबिय्यीन हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए पृष्ठ 353)

तारीख़ की एक और किताब में उनका ज़िक्र इस तरह मिलता है कि अम्र बिन साद अपने पिता से रिवायत करते हैं कि इस से पहले कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बदर की ओर रवाना होने के लिए हमारा निरीक्षण फरमाते मैंने अपने भाई उमेर बिन अबी वक़ास को देखा कि वह छुपते फिर रहे थे। इस पर मैंने उनसे पूछा हे भाई तुम्हें क्या हुआ है? उन्होंने कहा कि मैं डरता हूँ कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुझे देख लेंगे तो बच्चा समझ कर वापस भेज देंगे। मैं युद्ध के लिए जाना चाहता हूँ कि शायद अल्लाह तआला मुझे शहादत प्रदान करे। अत: जब यहआं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समक्ष पेश हुए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें छोटा समझकर वापस जाने का इरशाद फ़रमाया तो उमेर रोने लग गए। उस पर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें शामिल होने की अनुमति दे दी।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 79 उमेर बिन अबी वक़ास मुद्रित दारुल अहया अत्तुरास अल-अरबी बैरूत 1996 ई) उनकी तलवार बड़ी थी। एक रिवायत में आता है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने दस्ते मुबारक से उनकी तलवार की म्यान बांधी। (अल्असाब: फी तमीज़िस्सहाबा जिल्द 4 पृष्ठ 603 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2005 (हज़रत उमेर बिन अबी वक़ास जंग बदर में जब शहीद हुए उस समय आप सोलह वर्ष के थे। (अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 79 उमेर बिन अबी वक़ास मुद्रित दारुल अहया अत्तुरास अल-अरबी बैरूत 1996 ई) सोलह साल की उम्र भी ऐसी थी जिस में कद काठी बेशक छोटी होगी और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आमतौर बच्चों को युद्ध की अनुमति नहीं दी।

दूसरे सहाबी जिनका ज़िक्र होगा वे हज़रत कत्बह बिन आमिर हैं। यह अंसारी थे। आमिर बिन हदीद के बेटे थे। उनकी वफात हज़रत उसमान के दौरे ख़िलाफ़त में हुई। उनकी मां का नाम ज़ैनब पुत्री उमरो है। उन की पत्नी का नाम हज़रत उम्मे उमरो है जिनसे एक बेटी हज़रत उम्मे जमील हैं। बैअत उक़बा प्रथम और सानिया दोनों में ही शामिल हुए और आप उन छह अंसार सहाबा में से हैं जो मक्का में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाए। उनसे पहले अंसार में कोई मुसलमान नहीं हुआ था।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3, पृष्ठ 294 कत्बह बिन आमिर मुद्रित दारुल अहया अत्तुरास अल-अरबी बैरूत 1996 ई)

उनके इस्लाम स्वीकार करने की घटना के बारे में "सीरत ख़ात्मन्नबिय्यीन" में इस तरह लिखा है कि ग्यारह नबवी के महीने रजब में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मक्का में यसरब वालों यानी मदीना वालों से मुलाकात हुई। आप अलैहि वसल्लम ने नस्ल और वंश के बारे में पूछा तो पता चला कि कबीला ख़ज़रज के लोग हैं और यसरब से आए हैं। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बहुत प्यार के लहजे में कहा क्या आप लोग मेरी कुछ बातें सुन सकते है। उन्होंने कहा हाँ। आप क्या कहते हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बैठ गए और उन्हें इस्लाम में आमंत्रित किया और कुरआन की कुछ आयतों को सुना कर अपने मिशन से परिचित कराया। उन्होंने एक दूसरे को देखा और कहा, यह एक मौका है कि यहूदी हम से आगे निकल जाए और यह कह कर सभी मुसलमान हो गए। ये छह लोग थे जिनके नाम हैं। अबू उमामा असद बिन ज़ुरार, जो बनू नज्जार से थे और पुष्टि करने वाले पहले व्यक्ति थे। औफ बिन हारिस भी बनू नज्जार से थे जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दादा अब्दुल मुत्तलिब के ननिहाल का क़बीला था। राफेअ बिन मलिक जो बनू ज़रीक से थे। जो कुरआन शरीफ नाज़िल हो चुका था वह इस अवसर पर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें सुनाया। कत्बह बिन आमिर जो बनू सलमा से थे और अक़बा बिन आमिर जो बनी हराम से थे और जाबिर बिन अब्दुल्लाह बिन रयाब जो बनी उबैद से थे। इस के बाद ये लोग आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से विदा हुए और जाते हुए अर्ज़ किया कि हमें आपस की जंगों ने बहुत कमज़ोर कर रखा है और हम में आपस में बहुत मतभेद हैं। हम यसरब में जा कर अपने भाइयों में इस्लाम का प्रचार करेंगे। क्या आश्चर्य है कि अल्लाह तआला आप के माध्यम से फिर से सब को जमा कर दे? फिर हम हर तरह से आपकी मदद करने के लिए तैयार होंगे। अत: ये लोग गए और उनकी वजह से यसरब में इस्लाम का चर्चा होने लगा।

(सीरत ख़ात्मन्नबिय्यीन हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए मुख्य 221-222)

कहते हैं इस्लाम ने आकर फूट डाल दी। इस्लाम के कारण आपस की फूट और शरारत जो थे उसकी समाप्ति को उन लोगों ने व्यक्त किया और फिर यह हो भी गया और वही लोग जो आपस में दुश्मन थे भाई भाई बन गए। पिछले एक ख़ुत्बा में भी मैंने उल्लेख किया था कि उन लोगों का आपस में भाई-भाई होना दुश्मन की आंखों में बड़ा खटकटता था जिसकी वजह से उन्होंने फूट डालने की कोशिश की लेकिन फिर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समझाने से और आप की कुव्वते कुदसिया से, एक भाईचारा का परिवेश फिर से पैदा हुआ।

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा में हज़रत कत्बह की गिनती माहिर तीर चलाने वालों में होती है। आप जंग बदर, उहद, खंदक और अन्य सभी जंगों में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल हुए। जंग उहद में आप बहादुरी से लड़े। उस दिन आप को नौ (9) घाव आए। फतेह मक्का के अवसर पर, बनू सल्मा का झण्डा आपके हाथ में था। जंग बदर में हज़रत कत्ब की भक्ति का यह अवस्था थी कि आप ने दो पंक्तियों के बीच एक पत्थर रखा और कहा कि मैं तब तक नहीं भागूंगा जब तक यह पत्थर न भागे यानी शर्त लगा दी कि मेरी जान जाए तो जाए मैदान छोड़ कर मैंने नहीं भागना।

उन के भाई यज़ीद इब्न आमिर थे जो सत्तर अंसार के साथ उक्बा में शामिल हुए थे। हज़रत यज़ीद बदर और उहद में भी शरीक हुए और उनकी औलाद मदीना और बग़दाद में भी थी। (अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3, पृष्ठ 294 कत्बह बिन आमिर और अख़ूह यज़ीद बिन आमिर मुद्रित दारुल अहया अत्तुरास अल-अरबी बैरूत 1996 ई) अबू हातिम से मरवी है कि हज़रत कत्बह बिन आमिर ने हज़रत उमर की ख़िलाफत में वफात पाई थी। जब कि इब्ने हब्बान के निकट, हज़रत उसमान की ख़िलाफत के समय में आप की वफात हुई।

(अल्असाब: फी तमीज़िस्सहाबा जिल्द 5 पृष्ठ 338 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2005 ई)

तीसरे सहाबी जिन का ज़िक्र होगा वह हज़रत शुजा बिन वहब जो वहब बिन राबिया के पुत्र थे। उन की वफात जंग यमामा में हुई थी। आप को शुजा बिन अबी वहब भी कहा जाता है। आप का परिवार बनू अब्दुल हाशिम का सहयोगी था। आप लम्बे शरीर वाले और बहुत घने बालों वाले थे। हज़रत शुजा की गिनती उन बुज़ुर्ग सहाबा में होती है जिन्होंने शुरुआत में ही आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को लब्बैक कहा था। बेअसत नबवी आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के छह साल बाद आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इशारे पर हब्शा के मुहाजरीन के दूसरे काफिले में शरीक होकर हब्शा चले गए थे। कुछ समय बाद यह अफवाह सुनकर कि मक्का वाले मुसलमान हो गए हैं हज़रत शुजा हब्शा से वापस मक्का आ गए। कुछ अवधि बाद आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा को मदीना हिजरत करने की आज्ञा दी तो आप भी अपने भाई उक़बा बिन वहब के साथ मक्का को अलविदा कह कर मदीना चले गए। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत औस बिन ख़ौला को हज़रत शुजाअ का धार्मिक भाई बनाया था। भाईचारा जो स्थापित किया था इस में हज़रत शुजा का भाई बनाया था। हज़रत शुजा बदर, उहद, खंदक सहित सभी जंगों में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल रहे और चालीस वर्ष से कुछ अधिक जंग यमामा में शहीद हुए।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 2 पृष्ठ 370 शुजा बिन वहब मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत), (अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 51 शुजा बिन वहब मुद्रित दारुल अहया अत्तुरास अल-अरबी बैरूत 1996 ई)

जंग हुदैबिया से वापस आने के बाद आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अक्सर राजाओं को इस्लाम की दावत के ख़त रवाना फरमाए थे। हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहो अन्हो से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक दिन मंच पर ख़ुत्बा देने के लिए खड़े हुए। स्तुति के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया में तुम में से कुछ को अजम के राजाओं की तरफ भेजना चाहता हूँ। जो अरब से बाहर के राजा हैं उन की तरफ भेजना चाहता हूं। तुम मुझ से असहमत न होना जैसा कि बनी इस्राईल ने किया था। तो मुहाजरीन ने अर्ज़ किया हे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हम आपसे कभी कुछ भी मतभेद नहीं करेंगे। आप हमें भिजवाइए।

(सीरत इब्ने कसीर पृष्ठ 421 अध्याय बअस इला कस्रा मुल्कुल फारस मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2005)

अत: जिन सहाबा को इस धार्मिक काम को करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ इन में हज़रत शुजा बिन वहब भी शामिल थे। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत शुजा को हारिस बिन अबी शमर ग़स्सानी की तरफ जो दमिश्क के निकट ग़ोता स्थान का रईस था राजदूत बनाकर भेजा और कुछ के निकट उसका नाम मुन्ज़िर बिन हारिस बिन अबी शमर ग़स्सानी था। बहरहाल आप ने तब्लीग़ का जो पत्र भेजा उसके प्रारंभिक वाक्यांश यह थे कि

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مِنْ مُحَمَّدٍ رَّسُوْلِ اللّٰهِ (صلی اللہ علیہ وسلم) اِلَى الْحَارِثِ ابْنِ اَبِيْ شِمْرٍ۔ سَلَامٌ عَلٰى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى وَاٰمَنَ بِاللّٰهِ وَصَدَّقَ فَاِنِّيْ اَدْعُوْكَ اِلٰى اَنْ تُؤْمِنَ بِاللّٰهِ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ يَبْقٰى لَكَ مُلْكُكَ

(शरह ज़रकानी जिल्द 5 पृष्ठ 46 व इमा मकातबतह अलस्सलातो वस्सलाम इलल मलूक व ग़रहुम मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1996 ई), (असाबह फी तमीज़स्सिहाब: जिल्द 3, पृष्ठ 256 शुजा बिन वहब मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत)

मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ से हारिस बिन अबी शमर की तरफ, सलामती है उस पर जो निर्देश का पालन करे। अल्लाह तआला पर ईमान लाए और पुष्टि करे। वास्तव में, मैं तुम को उस ख़ुदा पर ईमान लाने की दावत देता हूं जो एक है और उस का कोई साझीदार नहीं। इस अवस्था में तुम्हारी हुकूमत बाकी रहेगी।

हज़रत शुजा कहते हैं कि मैं पत्र लेकर रवाना हुआ यहाँ तक कि हारिस बिन अबी शमर के महल के दरवाज़ा पर पहुंचा वहाँ दो तीन दिन बीत गए लेकिन दरबार में पहुँच नहीं हो सकी। अंत मैं वहाँ जो सुरक्षा का प्रभारी था उसे बताया कि मैं आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दूत के रूप में उसके पास आया हूँ। तो उसने कहा कि यह जो रईस है वह अमुक दिन बाहर आएंगे इससे पहले आप उन से किसी तरह नहीं मिल सकते। शुजा कहते हैं कि फिर वही व्यक्ति मुझ से आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के निमंत्रण के बारे में पूछा मैंने उन विवरणों को बताना जारी रखा जिनका उस के दिल पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा और उस ने रोना शुरू कर दिया। यानी वे जो सुरक्षा प्रभारी था इस क्षेत्र के राजा या राज्यपाल या रईस कह लें। तब उसने कहा कि मैंने इंजील में पढ़ा था कि इस नबी का यही सटीक विवरण इस में मौजूद है। मगर मैं समझता था कि वह शाम के देश में प्रकट होंगे लेकिन अब पता चला कि वह कर्ज़ की धरती यानी यमन के क्षेत्र में प्रकट हो चुके हैं। बहरहाल मैं उन पर विश्वास लाता हूं। वह जो सिक्योरिटी इन्चार्ज था उस ने कहा मैं ईमान लाता हूं और उन की तस्दीक करता हूं। मुझे हारिस बिन इब्ने शमर से डर लगता है कि वह मुझे कत्ल कर देगा साथ इस बात को भी प्रकट किया कि वह मुझे कत्ल कर देगा। कहते हैं कि यह पहरेदार मेरा बहुत सम्मान करने लगा और बेहतर से बेहतर तरीके से मेरी मेज़बानी करता। वह मुझे हारिस के बारे में भी बताता है और उस के बारे में निराशा व्यक्त करता है। कहता कि हारिस बिन अबी शमर मूल रूप से कैसर से डरता है क्योंकि यह उसी की सरकार में था। अंत में, एक दिन हारिस बाहर निकल गया और दरबार में आकर बैठ गया। उसके सिर पर एक मुकुट था। तब मुझे हाज़िर होने की आज्ञा मिली। मैं उसके सामने पहुंचा और उस को आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पत्र सौंप दिया। उसने उस पत्र को पढ़ा और उसे फेंक दिया और ग़ुस्सा होना शुरू कर दिया। मेरे राज्य को कौन छीन सकता है? मैं ख़ुद उस की तरफ बढ़ता हूं चाहे वह यमन में में है या नहीं। मैं उसे दंडित करने के लिए वहां पहुंच जाऊंगा। लोग फौजी तैय्यारी करें उस ने अपने प्रशासन को तैयार होने का आदेश दिया। यानी आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में यह शब्द कहे कि मैं युद्ध के लिए निकलूँगा और जो पत्र लिखा है वह धमकी दी है कि अगर आप रुक न गए तो तुम्हारी हुकूमत जाती रहेगी। बहरहाल कहते हैं इसके बाद हारिस बिन अबी शमर रात तक वहीं बैठा रहा और लोग उसके सामने पेश होते रहे। तब उसने घुड़सवारों को तैयार करने का आदेश दिया और मुझे से कहा कि अपने आक़ा से यहां का सब हाल बता देना। इसके बाद उसने कैसर शाह रोम को आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पत्र की पूरी घटना लिखकर भिजवाई। अपना राजदूत भिजवाया और इस में लिखा कि इस तरह यह प्रतिनिधि मुझे इस्लाम की दावत देने आया था। हारिस बिन अबी शमर का पत्र कैसर के पास उस समय पहुंचा जब आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पत्र हज़रत दहया कलबी के हाथ कैसर को पहुंच गया था। कैसर ने हारिस के पत्र को पढ़ कर उसे लिखा कि नबी पर हमला और उन पर आक्रमण के विचार को छोड़ दो और उनसे मत उलझो। बहरहाल जब कैसर का यह जवाबी पत्र हारिस के

पास पहुंचा तो उसने हज़रत शुजा को जो कि तब तक वहीं ठहरे हुए थे बुलवाया और पूछा कि आप कब वापस जाने का इरादा रखते हैं? हज़रत शुजा ने कहा कल। उस समय राजा ने आपको स्वर्ण सौ मिसकाल सोना दिए जाने का आदेश दिया, और वह दरबान आप के पास आया। जिसने पहला सुरक्षा शुल्क लिया था, उसने खुद कुछ पैसे और कपड़े दिए। फिर सुरक्षा प्रभारी कहने लगा कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा मेरा सलाम अर्ज़ करना और बताना कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के धर्म का अनुयायी बन गया हूँ। हज़रत शुजा कहते हैं कि उसके बाद जब मैं आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास पहुंचा तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को राजा हारिस के बारे में सब हालत बताई। आपने सारी बातें सुन कर फरमाया कि वह नष्ट हो गया, उसका साम्राज्य नष्ट हो गया था। तब मैंने आप को उस के महल का दरबान मुरी की सलाम पहुंचाया और उस ने जो कुछ कहा था सबकुछ बताया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया उस ने जो कुछ कहा सच कहा है। सीरतुल हलबिया में यह सारी घटना लिखी है

(अस्सीरतुल हलबिया जिल्द 3, पृष्ठ 357-358 अध्याय ज़िक्र किताबह स.अ.व. इला हारिस बिन अबी श्मर मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2002 ई)

हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने इतिहास की विभिन्न पुस्तकों से लेकर जो बातें वर्णित हैं इसमें जो कुछ अधिक बातें हैं वह ये हैं कि आप लिखते हैं कि पांचवां तब्लीग़ी पत्र ग़स्सान राज्य के हाकिम हारिस बिन अबी श्मर नाम को लिखा गया। ग़स्सान का राज्य अरबों के साथ उत्तर-पूर्व में था और इसका रईस कैसर के अधीन था। जब हज़रत शुजा बिन वहब वहां पहुंचे, तो हारिस कैसर की जीत के उत्सव की तैयारी कर रहा था। जो रोम का बादशाह था उस ने अपनी जीत का जश्न मनाना था वह वहां उसके लिए तैयारी कर रहा था। हरिस से मिलने से पहले, शुजाह बिन वहब ने उस के दरबान से मुलाकात की। वह एक अच्छा आदमी था। उस ने शुजा से मौखिक शब्दों को सुनकर शीघ्र ही आपको कबूल कर लिया। बहरहाल कुछ दिन के इंतजार के बाद ही हज़रत शुजा बिन वहब को रईस ग़स्सान के दरबार में प्रवेश का अवसर मिल गया। उन्होंने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पत्र प्रस्तुत किया। हारिस ने पत्र पढ़कर क्रोध से फेंक दिया और न केवल क्रोध से फेंक दिया बल्कि उल्लेख हो चुका है सैनिकों को हमले के लिए तैयारी का आदेश दिया और इस दौरान उसने कैसर को भी यह पत्र भेजा और यह बताया कि मैं हमला करने लगा हूं तब क़ैसर ने कहा, सेना को मत भेजो और मुझे दरबार में शरीक होने के लिए यरूशलेम में मिलो। क़ैसर ने इस रईस को बुलाया। बहरहाल यह तो उन का मामला वहीं पर समाप्त हो गया। हदीस और इतिहास से संकेत मिलता है कि मदीना में लंबे में एक समय से डर था कि ग़स्सानी कबीले मुसलमानों पर कब हमला करते हैं।

(उद्धरित सीरत ख़ात्मन्नबिय्यीन हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए पृष्ठ 828-829)

लंबे समय तक यह डर रहा। इस जवाब के कारण जो श्मर ने आप के सहाबी को दिया था।

महीने रबीउल अव्वल सन 8 हिजरी में नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़बर मिली कि बिनो हावज़न की एक शाखा बनो आमिर मुसलमानों के ख़िलाफ लड़ाई के लिए तैयारी कर रहे हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत शुजा को 24 मुजाहेदीन देकर उन को हमला को रोकने पर तैनात किया जो कि मदीना पर हमला करने लगे थे। इस समय बनो आमिर के लोग मदीना से पाँच रातों की दूरी पर अलस्सी जो मक्का और बसरा के बीच एक स्थान है उस पर तम्बू लगाए बैठे थे। आप यानी हज़रत शुजा मुजाहेदीन के साथ रात को यात्रा करते और दिन को छिपे रहते यहाँ तक कि अचानक सुबह के समय बनू आमिर के सिर पर जा पहुंचे। वे मुसलमानों को अचानक अपने सिर पर देख कर बौखला गए बावजूद इसके कि वह हमले की तैयारी के लिए निकले थे और पूरी सेना के साथ निकले थे और सब कुछ छोड़ छाड़ कर भाग खड़े हुए। हज़रत शुजा ने अपने मुजाहेदीन को आदेश किया कि उन का पीछा न करें। कोई जरूरत नहीं पीछा करने और लूट की उस ज़माने के रिवाज के अनुसार जो भी वे छोड़ गए थे ऊंट और बकरी वह हांक कर मदीना ले आए। लूट के सामान का अंदाज़ा इस बात से हो सकता है कि प्रत्येक मुजाहिद को पंद्रह पंद्रह ऊंट मिले थे और अन्य सामान इसके अलावा था

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 2 पृष्ठ 313 सिरया शुजा बिन वहब इला बनी आमिर बालस्सी मुद्रित दारुल अहया अत्तुरास अल-अरबी बैरूत 1996 ई) अर्थात वह हमला करने वाले पूरी तैय्यारी के साथ आए थे और युद्ध के उपकरणों से सुसज्जित थे।

फिर जिन सहाबी का उल्लेख होगा उन का नाम हज़रत शामास बिन उस्मान है। उन का पहले भी एक ख़ुत्बा में उल्लेख किया गया है। उस्मान बिन शुरीद उनके पिता थे। जंग उहद 3 हिजरी में उनकी वफात हो गई। उनका नाम उस्मान और शमास उपनाम था और आप इस उपनाम से प्रसिद्ध हो गए। बनू मख़ज़ूम में से थे और इस्लाम की शुरुआत में ही मुसलमान हो गए थे।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 2 पृष्ठ 393-394 श्मास बिन उसमान मुद्रित दारुल फिक्र बैरूत 2003 ई)

इब्ने हिशाम ने हज़रत श्मास बिन उसमान के नाम श्मास के रखे जाने का कारण बताते हुए लिखा है कि श्मास का नाम उस्मान और श्मास कहलाने का कारण यह है कि ईसाइयों के एक धार्मिक नेता जिसे श्मास कहते हैं जाहलियत के ज़माना में मक्का आया। ईसाई नेता बहुत सुन्दर था। उस की सुन्दरता को देख कर मक्का के लोग आश्चर्यचकित हुए। अतबह बिन राबिया जो उस्मान के मामो थे उन्होंने कहा कि मैं इस श्मास से अधिक एक सुन्दर लड़का तुम को दिखाता हूं और फिर अपने भांजे उस्मान को लाकर दिखाया। तब से लोग उसमान को शमास कह कर बुलाने लगे। हज़रत श्मास का एक नाम श्मास होने की एक वजह यह भी कही जाती है कि आपका नाम श्मास आप के चेहरे के लाल और सफेद रंग की वजह से था मानो कि आप सूरज की तरह हैं। इसलिए आप का शमास नाम आपके मूल नाम पर प्रभावशाली हो गया।

(सीरत इब्ने हिशाम पृष्ठ 462 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2001 ई) (अल्मुन्तज़िम फी तारीख़ अलमुलूक वल् उमम् जिल्द 3 पृष्ठ 187 बहवाला अलमकतब: अलशामलह:)

हज़रत श्मास बिन उसमान और आप की माँ हज़रत सफिया पुत्री राबिया बिन अब्दुल शम्स हब्शा की तरफ दूसरी हिजरत में शामिल थीं। हज़रत श्मास की मां शियबह और उतबह (सरदाराने मक्का जो जंग बदर में मारे गए थे) की बहन थीं। हज़रत श्मास बिन उसमान ने हब्शा से वापसी पर मदीना की तरफ़ हिजरत की। हज़रत श्मास बिन उसमान ने मदीना की ओर हिजरत के बाद हज़रत मुबश्शर बिन अब्दे मुन्ज़र के यहां निवास किया। सईद बिन मुसय्यब कहते हैं कि हज़रत श्मास बिन उसमान जंगे उहद में शहीद होने तक हज़रत मुबश्शर बिन अब्दुल मनज़र के यहां ठहरे। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत श्मास बिन उसमान और हज़रत हंज़लह बिन अबी आमिर के बीच भाईचारा स्थापित करवाया। हज़रत श्मास के बेटे का नाम हज़रत अब्दुल्लाह था और आप की पत्नी उम्मे हबीब पुत्री सईद थीं। प्रारंभिक हिजरत करने वाली मुस्लिम महिलाओं में से थीं।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 2 पृष्ठ 394 मुद्रित दारुल फिक्र बैरूत 2003) (सैरुस्सहाब: जिल्द 2 पृष्ठ 324 श्मास बिन उसमान मुद्रित दारुल अहया तुरास अल्अरबी कराची) (अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 130 मुद्रित दारुल अहया अत्तुरास अल-अरबी बैरूत 1996 ई)

हज़रत श्मास बिन उसमान जंग बदर और जंग उहद में शामिल हुए। आप जंग उहद में बहुत बहादुरी से लड़े। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया मैंने श्मास बिन उसमान को ढाल की तरह पाया। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दाएं या बाएं जिस तरफ भी नज़र उठाते श्मास को वहीं पाते जो जंगे उहद में अपनी तलवार से बचाव कर रहे थे यहाँ तक कि अल्लाह तआला के आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर मूर्छा छा गई जब आप पर हमला हुआ और पत्थर आकर लगा। हज़रत श्मास ने अपने आप को आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने ढाल के रूप में बना लिया था यहां तक कि आप गंभीर रूप से घायल हो गए और आप को उसी हालत में मदीना उठाकर लाया गया। आप में अब कुछ जान बाकी थी। आप को हज़रत आयशा के यहाँ ले जाया गया। हज़रत उम्मे सलमा ने कहा कि मेरे चचेरे भाई को मेरे सिवा किसी और के यहाँ ले जाया जाएगा? आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि उन्हें हज़रत उम्मे सलमा के पास उठाकर ले जाओ। अत: आप को वहीं ले जाया गया और आप ने उन्हीं के घर वफात पाई। वहाँ उहद से ज़ख्मी हो कर आए थे। फिर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेश से हज़रत श्मास को उहद में ले जाकर उन्हीं कपड़ों में दफनाया गया। जब युद्ध के बाद आप को घायल हालत में उठाकर मदीना लाया गया था तो वहाँ एक दिन और एक रात तक जीवित रहे थे और इस दौरान

कहा जाता है कि उन्होंने कुछ खाया पिया नहीं, बेहद कमज़ोरी की स्थिति थी बल्कि बेहोशी की हालत थी। हज़रत श्मास रज़ियल्लाहो अन्हो की वफात 34 वर्ष की उम्र में हुई।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3, पृष्ठ 131 मुद्रित दारुल अहया अत्तुरास अल-अरबी बैरूत 1996 ई)

फिर एक सहाबी हज़रत अबु अबस बिन जबर हैं। उनके पिता का नाम जबर बिन अमर था। उनकी वफात 34 हिजरी में 70 साल की उम्र में हुई। उनका असल नाम अब्दुर्रहमान था और कुन्नियत अबू अबस थी। आपका संबंध अंसार के कबीला बनू हारस: से था। जाहलियत के दौर में उनका नाम अब्दुल उज़्ज़ा था। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे बदल कर अब्दुर्रहमान कर दिया था। उज्ज़ा उनकी मूर्ति का नाम था इसलिए बदला और अब्दुर्रहमान कर दिया। आप आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ जंग बदर सहित सभी जंगों में शरीक रहे। काब बिन अशरफ यहूदी को जिन सहाबा ने कत्ल किया यह भी उन में शामिल थे। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू अबस और हज़रत ख़ुनैस के बीच भाईचारा स्थापित फ़रमाया। 34 हिजरी में सत्तर वर्ष की उम्र में आप की वफात हुई। मक्का में आप की बहुत औलाद मौजूद थी। हज़रत उसमान ने नमाज़ जनाज़ा पढ़ाया और जन्नतुल बक़ी में आप की तदफीन हुई।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 5 पृष्ठ 204-205 प्रकाशन दारुल फिकर बैरूत 2003 ) (अल्असाब: फी तमीज़िस्सहाबा जिल्द 7 पृष्ठ 222 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2005 (अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 238 मुद्रित दारुल अहया अत्तुरास अल-अरबी बैरूत 1996 ई )

हज़रत अबु अबस बिन जबर के बारे में वर्णित है कि इस्लाम की बेअसत से पहले भी आप अरबी लिखना जानते थे हालांकि उस समय अरब में लिखने का रिवाज बहुत कम था। हज़रत अबु अबस और हज़रत अबू बरदा बिन न्यार ने जब इस्लाम स्वीकार किया उन दोनों ने बनू हारसा के बुतों को तोड़ दिया था। हज़रत उमर और हज़रत उसमान उन्हें लोगों से सदका वसूल करने के लिए भेजा करते थे अर्थात कि माल विभाग भी उनके पास था।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 238 मुद्रित दारुल अहया अत्तुरास अल-अरबी बैरूत 1996 ई ) आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय आप की आंख की रौशनी चली गई थी तो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप को एक छड़ी देते हुए कहा कि इससे प्रकाश प्राप्त करो। अत: वह छड़ी आप के आगे रौशनी किया करती थी।

(अल्असाब: फी तमीज़िस्सहाबा जिल्द 7 पृष्ठ 222 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2005 )

इसका मतलब एक तो यह अर्थ भी हो सकता है कि यह छड़ी तुम्हारे हाथों में होगी और जिस तरह से अंधे अपनी छड़ी का उपयोग करते हैं, चलते हुए मदद हो जाएगी। लेकिन यह भी हो सकता है कि प्रकाश भी निकलता हो और कई बार रात में कम दिखाई देता हो तो प्रकाश निकलता हो क्योंकि कुछ और सहाबा के बारे में भी यह रिवायत मिलती है कि कई बार अंधेरे में वह यात्रा कर रहे होते थे तो उनके छड़ी से प्रकाश निकलता था। (अहमद बिन हंबल जिल्द 4 पृष्ठ 693 हदीस 13906 मसनद अनस बिन मालिक मुद्रित आलेमुल कुतुब बैरूत 1998 )बल्कि एक रिवायत यह भी है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के तीन सहाबा यात्रा कर रहे थे और रात अंधेरी थी, तो उन को भी अल्लाह तआला ने यह नज़ारा दिखाया कि रौशनी उन के आगे चलती थी। (उद्धरित)

हज़रत अबू अबस के एक बेटे रिवायत करते हैं कि हज़रत अबू अबस आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पीछे नमाज़ अदा किया करते थे और फिर अपने कबीले बनो हारसी की तरफ चले जाया करते थे। एक बार एक अंधेरी रात में जब बारिश हो रही थी अपने घर की ओर जा रहे थे तो आप की छड़ी से प्रकाश निकलना शुरू हो गया जिसने अपने लिए रास्ते में प्रकाश कर दिया।

(अलमुस्तदरिक अलस्सहीहैन जिल्द 6 पृष्ठ 2028 हदीस 5495 मुद्रित मकतबा नज़ार अल्मुस्तफा अलबाज़)

हज़रत उसमान रज़ियल्लाहो अन्हो आप की बीमारी के दौरान उनसे मिलने के लिए आए तो यह बेहोशी की हालत में थे। जब ठीक हुए तो हज़रत उसमान ने कहा, "आप ख़ुद को कैसे पाते हैं?" उन्होंने कहा कि हम अपनी स्थिति अच्छी देखते हैं सिवाय एक ऊंट का घुटना बांधने वाली रस्सी के जो हम से और उम्माल से ग़लती से खो गई थी। अब तक हम इससे छुटकारा नहीं पा सके।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 238 मुद्रित दारुल अहया अत्तुरास अल-अरबी बैरूत 1996 ई)

यह उम्माल में से थे जैसा कि मैंने बताया कि माल सदक़ा , चंदा आदि जमा करने के लिए उन्हें भेजा जाता था। जिम्मेदारी और ईमानदारी की यह गुणवत्ता थी कि ऊंट बांधने की एक रस्सी ग़लती से खो गई और इसलिए जीवन के अंत तक बेचैन रहे। मौत की बीमारी में भी है, यह विचार आया कि यह रस्सी अगली दुनिया में हमारे लिए परेशानी का कारण न बन जाए। तो ये वे लोग थे जिन के भय और ईमानदारी के ऐसे मानक थे।

हज़रत अनस से मरवी है कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अधिक जल्दी असर की नमाज़ पढ़ाने वाला कोई न था यानी समय के अनुसार पहले समय में असर की नमाज़ पढ़ लिया करते थे। अंसार के दो आदमी थे जिनके घर मस्जिद से बहुत दूर थे। एक हज़रत अबूल बाबह बिन अब्दुल मुनज़िर थे जिनका संबंध बनी अम्रो बिन औफ से था और दूसरे हज़रत अबु अबस बिन जबर थे जिनका संबंध बनू हारस: से था। अबू लबाबह का घर कबा में था और हज़रत अबू अबस का घर बनी हारस: में था। और पर्याप्त दूरी पर दो अढ़ाई मील था। ये दोनों सहाबा आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ नमाज़ पढ़ते और जब अपनी क़ौम में वापस पहुंचते तो उन्होंने तब तक वहाँ असर की नमाज़ न पढ़ी होती थी।

(अहमद बिन हंबल जिल्द 4 पृष्ठ 607 हदीस 12516 मुद्रित आलमुल कुतुब बैरूत 1998 ई)

तो यह उन लोगों के तेज़ चलने की गुणवत्ता भी है और यह भी कि दूरी तय करके आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पीछे नमाज़ पढ़ने आया करते थे।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबस से रिवायत है कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जिस व्यक्ति ने अपने कदम अल्लाह तआला के रास्ते में मिट्टी से गन्दे किए अल्लाह तआला ने उस पर आग हराम कर दी।

(अहमद बिन हंबल जिल्द 5 पृष्ठ 469 हदीस 16031 मुद्रित आलमुल कुतुब बैरूत 1998 ई) अर्थात अल्लाह तआला की राह में जिहाद करने वाले, अल्लाह तआला की प्रसन्नता पर चलने वाले, अपने आप को श्रम में डालने वाले लोग इस में शामिल हैं। और इसी तरह दावत इलल्लाह के लिए यात्रा करने वाले भी और वे लोग भी जो एक लंबी दूरी से मस्जिद में नमाज जमाअत के लिए आते हैं ये सब लोग उन लोगों में शामिल हैं। अल्लाह तआला फरमाता है कि उन पर आग हराम है।

फिर एक सहाबी अबू बकर बिन अब्दुल्लाह अंसारी थे। अब्दुल्लाह बिन सअलब: उनके पिता का नाम था। उनकी वफात 12 हिज्री में यमामा के युद्ध में हुई थी। उनका नाम अब्दुर रहमान इराशी बिन अब्दुल्लाह था। उनका पुराना नाम अब्दुल उज्ज़ा था। इस्लाम स्वीकार करने के बाद आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनका नाम अब्दुर्रहमान रखा। आपके संबंध बिल्ली कबीला की एक शाखा बनू उनैफ से था और आप अंसार के परिवार बनो जहजबान बिन कुल्फ़ह के सहयोगी थे। आपका उपनाम अबू अक़ील है और आप इसी से प्रसिद्ध हैं। जंग बदर, उहद ख़ंदक अर्थात सारी जंगो में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ जंग यमामह 12 हिजरी में हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ की ख़िलाफत के समय में शहीद हुए।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3, पृष्ठ 248-249 प्रकाशक दारुल अहया अत्तुरास अल-अरबी बैरूत 1996 ई)

उनके इस्लाम स्वीकार करने की घटना यूं बयान हुई है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का से हिजरत फ़रमा कर मदीना पधारे तो एक नौजवान आदमी आप की सेवा में आया। ईमान लाने के बाद आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बैअत की और बुतों से बहुत अधिक घृणा व्यक्त की। इस अवसर पर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप से पूछा कि तुम्हारा नाम किया है ?" उन्होंने कहा कि अब्दुल उज़्ज़ा। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, आज से आपका नाम अब्दुल रहमान है। उन्होंने इरशाद नबवी के सामने सिर को झुका दिया और सब लोगों को कह दिया कि आज से मैं अब्दुल उज़्ज़ा नहीं अब्दुर्रहमान हूँ। आप के पूर्वजों में एक व्यक्ति का नाम इराशा बिन आमिर था उसकी तुलना में उन्हें इराशा भी कहा जाता है।

(आसमाने हिदायत के सत्तर सितारे तालिब हाशमी पृष्ठ 491-492 मुद्रित अलबदर पब्लिकेशन उर्दू बाज़ार लाहौर)

आप उन सहाबा में से थे जब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सदका का आदेश देते तो सारी रात सदक़ा और जो कुछ मिलता वह सदका कर देते। अत:

बुख़ारी में आप के बारे में आता है कि अबू मसूद वर्णन करते हैं कि जब हमें सदका का आदेश हुआ तो हम उस समय मज़दूरी पर बोझ उठाया करते थे। हज़रत अबू अक़ील आधा साअ खजूरे के पैसों में से लेकर आए। एक और व्यक्ति उनसे अधिक लाया तो उस पर मुनाफिक कहने लगे कि अल्लाह तआला तो उस व्यक्ति के सदके से बेनियाज़ है और दूसरे व्यक्ति ने जो सदक़ा किया वे केवल दिखावे के लिए है। तब यह आयत नाज़िल हुई।

اَلَّذِيْنَ يَلْمِزُوْنَ الْمُطَّوِّعِيْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ فِي الصَّدَقٰتِ وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ اِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُوْنَ مِنْهُمْ ۙ سَخِرَ اللّٰهُ مِنْهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ

( अत्तौब: 79)

ये मुनाफिक हैं जो मोमिनों में से ख़ुशी से बढ़ बढ़ कर सदके देने वालों पर उपहास किया करते हैं और उन पर भी जो केवल अपनी मेहनत की कमाई कि कोई ताकत नहीं रखते। अत: बावजूद इस कुरबानी के मुनाफिक हंसी करते हैं और अल्लाह उन में से बहुत अधिक विरोध करने वालों को सज़ा देगा और उन को दर्द वाला आज़ाब पहुंचेगा।

(सही अल-बुख़ारी किताबुत्तफसीर जिल्द 10 पृष्ठ 371 हदीस 4668 प्रकाशित नज़ारत नश्रो इशाअत रबवा)

अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने के उन के अजीब अजीब नज़ारे हैं। किस तरह ये लोग कोशिश करते थे और उन लोगों के इन्हीं नमूनों को स्वीकार करते हुए अल्लाह तआला ने बाद में आने वाले लोगों को भी इन के नक्शे कदम पर चलने की नसीहत फरमाई।

इस घटना का विस्तार वर्णन करते हुए इब्न हजर असकलानी कहते हैं कि इन्हें साहेबुस्साअ भी कहते हैं घटना कुछ इस तरह है कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ अपना आधा माल लेकर आए। अंसार के ग़रीब मुसलमानों में से एक आदमी अबू अक़ील आगे बढ़ा और कहने लगा हे अल्लाह के रसूल में खजूर के दो साअ के बदले सारी रात कुएं से पानी ख़ींचता रहा और एक साअ मैंने अपने घर वालों के लिए रख दिया और आधा लेकर आया हूं तो मुनाफिकों ने कहा कि अल्लाह और उस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अबू अक़ील के साअ से ग़नी हैं। तो अल्लाह तआला ने फरमाया कि

اَلَّذِيْنَ يَلْمِزُوْنَ الْمُطَّوِّعِيْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ فِي الصَّدَقٰتِ وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ اِلَّا جُهْدَهُمْ

(अल्असाब: फी तमीज़िस्सहाबा जिल्द 7 पृष्ठ 233 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2005) यानी ये मुनाफिक हैं जो मोमिनों में से ख़ुशी से बढ़ बढ़कर दान देने वालों पर कटाक्ष करते हैं ऐसे लोग हैं जो केवल अपनी मेहनत के अतिरिक्त कोई ताकत नहीं रखते। आप ही वह अंसारी साहिब थे जिन्होंने मुस्लामा कज़्ज़ाब पर आख़री वार किया। अत: इब्ने साद कहते हैं कि जंग यमामा के दिनों में, मुसलमानों में हज़रत अबौ अकील उनैफी घायल हो गए थे। उसके कंधे और दिल के बीच तीर लगा जो लग कर टेड़ा हो गया था और जिस से वह शहीद न हुए। फिर उस तीर को निकाला गया। उनके बाएं तरफ इस तीर के लगने के कारण कमज़ोरी पैदा हो गई। यह शुरू दिन की बात है। फिर उन्हें उठाकर ख़ेमे में लाया गया और उनके तम्बू में लाया गया। जब लड़ाई तेज़ हो गई और मुसलमानों को हार हुई यहां तक कि मुसलमान पीछे हटते हटते अपने ख़ेमों से पीछे चले गए। उस समय हज़रत अबू अकील घायल थे। उन्होंने हज़रत मअन बिन अदी की आवाज़ सुनी, जो लगातार अंसार को ऊंची आवाज़ से लड़ने के लिए उभार रहे थे कि अल्लाह तआला पर भरोसा करो। अल्लाह पर भरोसा करो और फिर अपने दुश्मन पर हमला करें। और हज़रत मअन लोगों से आगे तेज़ी से चल रहे थे। यह उस समय की बात है जब अंसार कह रहे थे कि हमें अंसार को दूसरों से अलग करना चाहिए। अत: एक एक कर के अंसार एक स्थान पर जमा हो गए और लक्ष्य था कि ये लोग जमकर लड़ेंगे और बहादुरी से आगे बढ़ेंगे और दुश्मन पर हमला करेंगे इस से सभी मुसलमानों के कदम जम जाएंगे और मनोबल बढ़ेगा।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर का कहना है कि अबू अक़ील अंसार के पास जाने के लिए खड़े हो गए। वह घायल अवस्था में थे, बहुत कमज़ोर था लेकिन खड़े हो गए। मैंने कहा, हे अबू अक़ील, आप क्या चाहते हैं, आप में लड़ने की कोई शक्ति नहीं है?' उन्होंने कहा कि इस घोषणा को मेरे नाम से बुलाया गया है। मैंने कहा कि वह अंसार घायल लोगों को नहीं बुला रहा है। वह उन लोगों को बुला रहा है जो लड़ने में सक्षम हैं। हज़रत अबु अक़ील ने कहा कि उन्होंने अंसार को बुलाया है और चाहे घायल हूँ लेकिन मैं भी अंसार से हूँ इसलिए मैं उनकी पुकार पर ज़रूर जाऊँगा चाहे मुझे घुटनों के बल जाना पड़े। इब्ने उम्र फरमाते हैं कि हज़रत अबु अक़ील ने अपनी कमर बांधी और अपने दाहिने हाथ में नंगी तलवार ली और फिर यह घोषणा करने लगे कि हे अंसार युद्ध हुनैन की तरह दुश्मन पर फिर हमला करो। अत: अंसार इकट्ठा हो गए। अल्लाह उन पर रहम करे। और मुसलमान बहुत बहादुरी के साथ दुश्मन की तरफ बढ़े, यहां तक कि दुश्मन को युद्ध का मैदान छोड़ कर बाग़ में घुस जाने को मजबूर कर दिया। मुसलमान और दुश्मन एक दूसरे में घुस गए और हमारे और उनके बीच तलवार चल रही थीं। इब्ने उम्र कहते हैं कि मैंने हज़रत अबू अकील को देखा उन का ज़ख्मी हाथ कंधे से कट कर ज़मीन पर गिरा हुआ था और उनके शरीर पर चौदह घाव थे जिन में से प्रत्येक घाव जानलेवा था और अल्लाह तआला का दुश्मन मुस्लेम: कत्ल हो गया था और वह भी साथ ही पड़ा था। अबू अकील ज़मीन पर घायल पड़े थे और उनकी आख़री सांस थी। मैंने झुक कर उन से पूछा और उनसे कहा, "हे अबू अकिल! उन्होंने कहा लब्बैक हाज़िर हूं और लड़खड़ाती हुई ज़ुबान से पूछा कि जीत किसे हुई है? मैंने कहा आप को ख़ुश ख़बरी हो कि मुसलमानों को जीत हुई है और मैंने ज़ोर से कहा कि अल्लाह तआला का दुश्मन मुसलेम: कज़्ज़ाब कत्ल हो चुका है। आप ने अल्लाह तआला की प्रशंसा की और आकाश की ओर अपनी उंगली उठाई और वफात पा गए। अल्लाह उन पर रहम करे। इब्ने उम्र फ़रमाते हैं कि मदीना वापस आने के बाद मैंने हज़रत उमर को उनकी सारी कारगुज़ारी सुनाई तो हज़रत उमर ने कहा अल्लाह तआला उन पर दया करे वह हमेशा शहादत मांगा करते थे और जहाँ तक मुझे पता है वह हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बेहतरीन सहाबा में से थे और आरम्भ में इस्लाम लाए थे यह हज़रत उमर के शब्द हैं।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3, पृष्ठ 249 मुद्रित दारुल अहया अत्तुरास अल-अरबी बैरूत 1996 ई )(हयातुस्सहाब: मुहम्मद यूसुफ कांधलवी जिल्द1 पृष्ठ 801 से 803 मुद्रित मकतबा उलमा लाहौर)

अल्लाह तआला समस्त सहाबा के स्तर ऊंचा फरमाता चला जाए।

नमाज़ के बाद मैं दो नमाज़ जनाज़ा पढ़ाऊंगा। पहला जनाज़ा मुहतरम मौलाना अब्दुल अज़ीज़ सादिक साहिब मुरब्बी सिलसिला बांग्लादेश का है। 26 जुलाई 2018 ई को उनका निधन हो गया। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। चौथी कक्षा की शिक्षा के दौरान शिक्षा प्राप्त करने के लिए यह कादियान चले गए जहां सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सोहबत में उन्हें तरबियत पाने का मौका मिला। भारत के विभाजन के बाद, बाहरी छात्रों को अपने देश लौटने का आदेश हुआ, वह बंगाल लौट आए। लेकिन केंद्र वापसी के लिए कोशिश करते रहे। भयावह परिस्थितियों में, वह कलकत्ता से दिल्ली के लिए रवाना हुए। यात्रा के दौरान हिंदू और सिख हैरान थे कि एक मुसलमान युवक इस तरह की स्थिति में ट्रेन में कैसे अकेले ख़तरे को छोड़ते हुए सफर कर रहा है। हालांकि, दिल्ली पहुंचने के बाद, वहां की जमाअत ने उन्हें एक जहाज़ में लाहौर भेजने का प्रबन्ध कर दिया था। उस समय,

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

पश्चिमी और पूर्वी पाकिस्तान एक थे और वह सकुशल रब्वा पहुंचे। जामिया के छह साल की शिक्षा उन्होंने वहाँ प्राप्त की और इसके बाद उन्होंने जामियातुल मुबश्शेरीन से तीन साल का और कोर्स पूरा किया। शाहिद की डिग्री हासिल की और फिर उसके बाद पंजाब विश्वविद्यालय और पेशावर विश्वविद्यालय से मौलवी फ़ाज़िल की डिग्री भी हासिल की। उसके बाद, उन्हें पाकिस्तान में फैसलाबाद जमाअत की समुद्री में उन की नियुक्त की गई। 1963 ई,1964 64 में, उन्हें पूर्वी बंगाल में परिवर्तित कर दिया गया, जहां उन्होंने विभिन्न जमाअतों में काम किया। हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस ने कुरआन के बंग्ला अनुवाद के लिए एक बोर्ड का गठन किया तो आदरणीय काज़ी मुहम्मद नज़ीर साहिब की सिफारिश पर मौलाना अब्दुल अज़ीज़ साहिब का नाम भी इसमें शामिल किया गया। इस में मुज़फ्फरुद्दीन बंगाली साहिब और मौलवी मुहम्मद अमीर बंगाली साहिब भी उनके साथ काम करते थे और इस काम के लिए, अनुवाद के लिए रबवा में निवास किया और इसके बाद मुहम्मद अमीर साहिब का ढाका हस्तांतरण और चौधरी मुज़फ्फरुद्दीन साहिब के वफात के बाद इस काम के लिए, उन्हें 1979 ई में ढाका भेजा गया था। मौलवी मुहम्मद साहिब की वफात के बाद आप अकेले यह काम करते रहे और अंत में सद साला(100) वर्षीय जयंती के अवसर पर बंगला अनुवाद कुरआन की छपवाई पूर्ण हुई। देश के विभिन्न स्थानों पर उन्होंने मुबल्लिग़ के रूप में काम किया। शिक्षा और प्रशिक्षण कार्य और प्रचार कार्य। कई बार शारीरिक उत्पीड़न का विरोधियों की तरफ से शिकार हुए। उन्हें अल्लाह तआला के मार्ग में कैद होने का सम्मान भी प्राप्त था। 1992 ई में जब बख़्शी बाज़ार ढाका जो जमाअत का केंद्र है, पर दुश्मन ने हमला किया तो इस दौरान बड़ी हिम्मत के साथ अकेले लड़ते रहे और इसके नतीजे में उनके सिर सहित सारे शरीर पर कई घाव आए।

पत्नी के अलावा तीन बेटियां और दो बेटे और कई पोते और नवासे तथा नवासियां हैं। उनकी तीन बेटियां बांग्लादेश में हैं। बेटों में से एक अमेरिका में हैं और छोटे बेटे हबीबुल्लाह सादिक साहिब यू.के में रह रहे हैं और एम.टी.ए विभाग समाचार में काम करते हैं। अल्लाह तआला मरहूम की स्थिति को बढ़ाता रहे और उन के बच्चों को उनके अच्छे कर्मों का अच्छा बदला प्रदान करे।

दूसरा नमाज़ जनाज़ा मुहम्मद ज़फ़रुल्लाह साहिब शहीद पुत्र आदरणीय बिशारत अहमद साहिब सय्यदवाला ननकाना का है। 29 अगस्त को ज़िला ननकाना में मग़रिब की नमाज़ के समय उनकी दुकान पर लुटेरों ने हमला किया और उनको फायरिंग कर के शहीद कर दिया। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन।

विवरण के अनुसार, छह डाकू अपनी बाइक पर बड़ी संख्या में आधुनिक हथियारों के साथ उन की दुकान पर आए। उसकी सोने की आभूषण की दुकान थी। दुकान को लूटा और लूटने के बाद, उन्होंने बाहर गोलाबारी की। इसके कारण बाहर भी एक आदमी मारा गया। जब वे लोग लूटमार कर के वापस जा रहे थे तो उन्होंने ज़फरुल्लाह साहिब पर फायरिंग कर दी। तीन गोलियाँ चलाएं जिस से आप की वफात हो गई। ज़फ़रुल्लाह साहिब की दुकान पर उनके अलावा और भी लोग मौजूद थे लेकिन उन्होंने केवल ज़फ़रुल्लाह साहिब को ही लक्ष्य किया कि यह एक अहमदी है इसलिए लक्ष्य कर लो, कोई फर्क नहीं पड़ता, दुगना इनाम मिलेगा।

मरहूम बहुत अधिक अच्छे आचरण के मिलनसार, और मेहमान नवाज़ी करने वाले थे उनकी वफात पर बहुत तादाद में लोग संवेदना के लिए आए और बड़ी संख्या ग़ैर जमाअत लोगों की थी। महोदय ख़िलाफत से बहुत प्यार करने वाले थे। हर तहरीक़ पर लब्बैक कहने वाले। नमाज़ जमाअत के पाबन्द। अल्लाह तआला की कृपा से मौसी थे। मरहूम बहादुर और साहसी और निडर थे। इस समय, सचिव शिक्षा सय्यदवाला के रूप में सेवा कर रहे थे। ज़फरुल्लाह साहिब की उम्र तीस साल की था। अढ़ाई साल पहले आप की शादी हुई थी। उनका एक बेटा, प्रिय मुहम्मद तलहा डेढ़ साल का हैं। मृतक ने पीछे रहने वालों में पत्नी, बेटे और माता-पिता, एक भाई और पांच बहनें हैं। अल्लाह तआला मरहूम के स्तर ऊंचे करे और सभी पीछे रहने वालों को धैर्य और प्रोत्साहन दे और उन्हें उन की नोकियों को जारी रखने वाला बनाए।

☆ ☆ ☆
☆ ☆
☆

**पृष्ठ 1 का शेष**

का भागी है क्षमा कर दिया जाएगा। अत: कहां यह कृपा की स्थिति और कहां बल-प्रयोग या दबाव। इसी से।

**हाशिया 2** कुछ मूर्ख मुझ पर आपत्ति करते हैं कि जैसा कि अल्मनार वाले ने भी किया कि यह व्यक्ति अंग्रेजों के देश में रहता है इसलिए जिहाद से मना करता है। ये मूर्ख नहीं जानते कि यदि मैं झूठ से इस सरकार को प्रसन्न करना चाहता तो मैं बारंबार क्यों कहता कि ईसा इब्ने मरयम सलीब से मुक्ति पाकर अपनी स्वाभाविक मृत्यु से श्रीनगर के स्थान पर मर गया और न वह ख़ुदा था और न ही परमेश्वर का बेटा। धार्मिक कट्टरता वाले अंग्रेज़ मेरे इस वाक्य से मुझ से क्रोधित न होंगे? अत: सुनो! हे मूर्खो। मैं इस सरकार की कोई चापलूसी नहीं करता बल्कि वास्तविकता यह है कि ऐसी सरकार जो इस्लाम धर्म और उसके रीति रिवाजों पर कोई हस्तक्षेप नहीं करती और न अपने धर्म की उन्नति हेतु हम पर तलवारें चलाती है, क़ुर्आनी दृष्टिकोण से धार्मिक युद्ध करना अवैध है क्योंकि वह भी कोई धर्म युद्ध नहीं करती। उनका धन्यवाद हम पर इसलिए अनिवार्य है कि हम अपना कार्य मक्का और मदीना में भी नहीं कर सकते थे, परन्तु इनके देश में ख़ुदा की ओर से यह हिकमत थी कि मुझे इस देश में पैदा किया। क्या मैं परमेश्वर की हिकमत का अपमान करूँ और जैसा कि क़ुर्आन शरीफ़ की आयत- "व आवयनाहुमा इला रबवतिन ज़ाते क़रारिन व मईन" (अलमौमिनून-51) में ख़ुदा हमें यह बात समझाता है कि सलीब की घटना के पश्चात हमने ईसा मसीह को सलीबी संकट से मुक्ति देकर उसको और उसकी मां को एक ऊँचे टीले पर स्थान दिया था कि वह विश्राम का स्थान था और उसमें झरने बहते थे। अर्थात् श्रीनगर कश्मीर। इसी प्रकार ख़ुदा ने मुझे इस सरकार के ऊँचे टीले पर जहां शांति भंग करने वालों का हाथ नहीं पहुँच सकता, स्थान दिया। जो विश्राम का स्थान है। इस देश में सच्चे ज्ञान के स्रोत जारी हैं और शांति भंग करने वालों के हमलों से अमन चैन है। फिर क्या अनिवार्य न था कि इस सरकार के उपकारों का धन्यवाद करते। इसी से

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 73 से 75)

☆ ☆ ☆


## हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

## ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**

Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186

Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab

For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

# सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की डेनमार्क और सवीडन का सफर, सितम्बर 2018 ई (भाग-2)

## सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ के साथ परिवार की मुलाकातें, आमीन की तकरीब, मुलाकात के बाद लोगों की भावनाएं।

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

**3 सितम्बर 2018 (दिन सोमवार)**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने सुबह 5 बज कर 40 मिनट पर तशरीफ़ लाकर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ के अदा करने के बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर गए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने प्रात: दफ्तर के विभिन्न मामलों को देखा और हिदायत दी।

**परिवार की मुलाकात**

कार्यक्रम के अनुसार, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ अपने दफ्तर पधारे और फैमली मुलाकातें आरम्भ हुई। आज सुबह के इस सत्र में, 62 परिवारों के 204 सदस्यों ने अपने प्रिय आक़ा के साथ मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। इन सभी परिवार के सदस्यों ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने दया करते हुए शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों तथा छात्राओं को कलम प्रदान किए और छोटे बच्चों तथा बच्चियों को चाकलेट प्रदान किए।

मुलाकात करने वाले ये परिवार जर्मनी के विभिन्न 45 जमाअतों और शहरों से आए थे। और उनमें से कुछ लोग और परिवार बहुत दूर से पहुंचे थे। विशेष रूप से जो लोग हनोवर से आए थे वे वो 350 किलोमीटर दूर से, और जो वेक्टा से आए थे वे 370 किलोमीटर की दूरी से आए थे। जब कि जेस्टबर्ग, से आने वाले 450 कि-लोमीटर से और पिन्बर्ग से आने वाले परिवार 550 किलोमीटर की दूरी से पहुंचे थे। और फिर इतना ही सफर वापसी का था और अपने घरों को जाऐंगी। मुलाकातों का यह कार्यक्रम दोपहर दो बजे तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ ज़ुहर व अस्र अदा करने से पहले आदरणीय ख्वाजा वहीद अहमद साहिब आफ जमाअत लिम्बर्ग का नमाज़ जनाज़ा हाज़िर और निम्नलिखित छह मरहूमून का नमाज़ जनाज़ा ग़ायब पढ़ाई।

**नमाज़ जनाज़ा हाज़िर**

* आदरणीय ख़्वाजा वाहीद अहमद साहिब आफ लुंबर्ग 29 अगस्त को अल्लाह तआला के आदेश अनुसार वफात पा गए। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। वफात के समय मरहूम का आयु 45 साल थी। मरहूम जमाअत के साथ सहयोग करने वाले थे। इज्लासों में में नियमित शामिल होते और नियमित चन्दा अदा करते थे। मरहूम ने अपने पीछे माता पत्नी और चार बेटियां छोड़ी हैं

**नमाज़ जनाज़ा ग़ायब**

(1) **आदरणीय नईम अहमद नासिर साहिब** (हेड क्लर्क फज़्ल उम्र अस्पताल, रबवा) 17 अगस्त 2018 को कुछ समय बीमार रहने के बाद वफात पा गए। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। जवानी से ही नेक, तक्वा वाले, वित्तीय कुरबानी करने वाले, ग़रीबों का ध्यान रखने वाले, नमाज़ तथा रोज़ा के पाबन्द, बहुत ईमानदार और वफादार इंसान थे। वक्फे ज़िन्दगी तो न थे परन्तु उस के बावजूद सारी ज़िन्दगी धर्म के कामों के लिए वक्फ थे। अपना काम श्रम, समर्पण, ईमानदारी और समय पर किया करते थे। दुर्रे समीन कलाम महमूद के शेअर प्राय: गुनगुनाते रहते थे। ख़िलफात के साथ बहुत प्यार और वफादारी का सम्बन्ध था। मरहूम मूसी थे।

(2) **आदरणीया नसीम अख्तर साहिबा** (पत्नी आदरणीय अहमद दीन साहिब मरहूम कार्यकर्ता वकालत माल तहरीक जदीद) कुछ समय बीमारी के बाद दिनांक 24 अगस्त को जर्मनी में वफात पा गईं। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। मरहूमा मूसिया थीं? अल्लाह तआला ने आप को उम्मुल मोमिनीन रज़ि अल्लाह तआला अन्हा के सेवा की तौफीक़ प्रदान की। वफात के समय उम्र 85 साल की थी। अपनी औलाद में चार बेटे और तीन बेटियां यादगार छोड़ी हैं। सभी बेटे जर्मनी के विभिन्न जमाअतों में सिलसिला की सेवा की तौफ़ीक़ पा रहे हीं। मरहूमा के बेटे आदरणीय मुनीरुद्दीन तारिक साहिब सदर क्षेत्र Gross Gerau हैं।

(3) **मुकरम शेख इम्तियाज़ अहमद इकबाल:** 11 अगस्त को, पिकनिक के में नदी के में नहाने के समय दूसरों को बचाते हुए डूब गए थे। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। वफात के समय उम्र 39 साल थी। मरहूम उच्च शिक्षित और बेहद बुद्धिमान था। उनकी श्रेष्ठ नैतिकता के कारण, हर एक का प्रिय और दूसरे लोगों की बहुत अधिक सेवा की बहुत भावना रखते थे। मृतक ने अपने पीछे माता, दो भाई, एक बहन, पत्नी और तीन छोटे बच्चे छोड़े हैं। स्वर्गीय चचेरे भाई, अतहर सुहैल, जर्मन में मुबल्लिग़ सिलसिला हैं।

(4)**आदरणीय ताहिर मजीद राणा साहिब:** 4 अप्रैल, 2018 को डसल ड्राफ में 45 साल की आयु में दिल की हरकत बन्द होने के कारण वफात पा गए। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। मरहूम बहुत ईमानदार और ख़िलाफत से बहुत प्यार करते थे। आप सिलसिला के कामों में बढ़चढ़ कर भाग लेने वाले थे। विशेष रूप से स्थानीय जलसा सालाना के अवसर पर ज़यिाफत विभाग में सेवा किया करते थे। मरहूम ने अपने पिता के अलावा पत्नी और तीन बच्चों को छोड़ा है। मरहूम के साले डाक्टर फाख़र अज़ीज़ राणा साहिब आफ कासिल हैं।

(5) **मुकरम मुहम्मद रियाज भट्टी:** 21 जुलाई को 62 वर्ष की आयु में जर्मनी में वफात पा गए। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। मरहूम लगभग 40 वर्षों तक जर्मनी में थे। पत्नी के अलावा, तीन बेटे और चार बेटियां यादगार छोड़ी हैं। मरहूम के बेटे आफाक़ अहमद भट्टी साहिब वेन्सादत हैं।

(6) **प्रिय वलीद अहमद इब्ने आदरणीय इफ्तिखार अली साहिब** (मलेशिया) 7 अगस्त 2018 को स्कूल से वापस घर में पड़े एसिड को शर्बत समझ कर पी लिया 9 साल की उम्र में वफात पा गए। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। बहुत ही सुन्दर चुस्त और बुद्धिमान बच्चा था। पाकिस्तान और मलेशिया के शिक्षक अध्ययन और अन्य गतिविधियों के मामला में इसकी बहुत सराहना की। प्रतियोगिताओं और गतिविधियों में भी भरपूरा हिस्सा लिया करता था। और अक्सर पोज़ीशन प्राप्त करता था। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ ज़ुहर तथा असर जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों को अदा करने के हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अपने निवास स्थान पर गए। पिछले पहर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ दफ्तर के विभिन्न मामलों में व्यस्त रहे।

**पारिवारिक मुलाकात**

कार्यक्रम के अनुसार छह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ्तर आए और परिवारों से मुलाकातें शुरू हुईं। आज शाम इस सत्र में 49 परिवारों के 187 लोगों ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाकात का सौभाग्य पाया। ये सभी परिवार के सदस्यों ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर लेने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने दया करते हुए शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों तथा छात्राओं को कलम प्रदान किए और छोटे बच्चों तथा बच्चियों को चाकलेट प्रदान किए। आज शाम के कार्यक्रम में मुलाकात करने वाले ये परिवार जर्मनी के 42 विभिन्न क्षेत्रों और जमाअतों से आए थे। उन लोगों की एक बड़ी संख्या थी जिन्होंने पहली बार ख़लीफतुल मसीह के साथ अपने जीवन में पहली बार मुलाकात की थी। हर कोई अपने अपने रंग में ख़ुशी और प्रसन्नता की भावनाओं से भरा था।

**हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात की प्रतिक्रियाएं**

कराची से आने वाले एक दोस्त कहने लगे कि मैं कुछ भी कहने की ताकत नहीं पाता। बस इतना ही कह सकता हूं कि आज हमारे जीवन का उद्देश्य पूरा हो गया है।

* सियालकोट से आने वाला एक दोस्त ने अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहा कि उसने जो देखा वह वर्णन नहीं हो सकता था। मुझे तो इस प्रकार लग रहा है कि फरिशतों की एक पूरी सेना हुज़ूर के पीछे है। हमारे जीवन का सपना आज पूरा हुआ है। फैसलाबाद से आने वाले एक दोस्त जो यहाँ आकर बसे हुए हैं और पहली बार हुज़ूर अनवर को मिल रहे थे कहने लगे कि मुलाकात करके दिल को जो संतोष मिला है वह बयान नहीं किया जा सकता। आज हमारे जीवन की इच्छा पूरी हुई है।

* सियालकोट से आने वाली एक परिवार जिसने अपने जीवन में पहली बार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाकात का सौभाग्य मिला, कहने लगे कि हमें तो एक सपना सा लग रहा था। मुझे यकीन नहीं था। जब हम मिलने के लिए अपनी बारी का तथा मुलाकात का इंतजार कर रहे थे, तो हम यह भी आश्वस्त नहीं था कि हुज़ूर हमारे के इतने क़रीब हैं। फिर हम कुछ देर बाद हुज़ूर के सामने थे। फिर हमें इतना प्यार मिला कि हम वर्णन नहीं कर सकते।

मुलाकात करके बाहर आने वाली प्रत्येक परिवार की अपनी भावना थे। कुछ की आँखें आंसुयों से भरी हुई थीं और बहुतों ने इस बात का इज़हार किया कि पाकिस्तान में तो हम हुज़ूर अनवर को टीवी पर ही देखते थे। आज, अपने जीवन में पहली बार आप को बहुत क़रीब से देखा है। और हम बहुत ख़ुश हैं कि हम ने हुज़ूर अनवर को देखा है और कुछ क्षण हुज़ूर के संग व्यतीत करने का अवसर मिला है। प्रत्येक की यही भावनाएं थीं और यही अवस्था थी।

मुलाकातों का यह कार्यक्रम 8 बजे तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर पधारे।

**आमीन का समारोह**

8 बज कर 20 मिनट परहुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद के हॉल में आए जहां कार्यक्रम के अनुसार आमीन का समारोह का आयोजन हुआ। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने निम्न 27 बच्चों और बच्चियों से कुरआन की एक एक आयत सुनी और अंत में दुआ करवाई।

प्रिय मशहूद अहमद नोफल, सरमद अहमद, सबीह अहमद, प्रिय बट, मुनीफ नोमान, आकिफ अहमद समर यारिश अहमद, अतहर महमूद, जाज़िब अहमद खान, हमाद अहमद आशिर अहमद, आरोन अज़ीज़ छीना, नफीस अहमद, कज़ीम अहमद चीमा, साहिल अतहर, अतहर अहमद ताहिर, ज़ीशान अहमद सुलैमान, नूरुद्दीन ज़िया, अब्दुल रहमान मलिक।

प्रिया फिज़ा तारिक, ताशफह शाहिद अहमद, अबीहा अहमद अलीशा अयमन अहमद काशफह अरसलान, सबीकह सुल्तान, बरीरह नासिर, सोहा एहसान।

एक बच्चे से सही तरह नहीं पढ़ा गया उस पर हुज़ूर अनवर ने प्रशासन को निर्देश देते हुए कहा कि बच्चों से पहले सुन लिया करें। आमीन के आयोजन के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा करने के पढ़ाई। नमाज़ों के अदा करने के बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर गए।

**4 सितम्बर 2018 (प्रतिदिन मंगलवार)**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह 5 बजकर 40 मिनट पर तशरीफ़ लाकर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ अदा करने के बाद,हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर पधारे। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ दफतर के मामलों में व्यस्त थे। हुज़ूर अनवर ने दफतर की डाक, ख़त और रिपोर्टों को देखा। दुनिया के विभिन्न हिस्सों से फैक्स और ई-मेल के माध्यम से ख़त और दैनिक रिपोर्ट प्राप्त होती हैं। इसके अलावा, जर्मनी की जमाअतों से सैकड़ों दैनिक पत्र प्राप्त होते हैं। जर्मन भाषा के पत्रों का अनुवाद हुज़ूर अनवर की सेवा में प्रस्तुत किया जाता है। हुज़ूर अनवर इन सभी ख़तों और रिपोर्टों को देखते हैं और निर्देश प्रदान करते हैं।

**औरतों की हुज़ूर अनवर से मुलाकात**

कार्यक्रम के अनुसार साढ़े ग्यारह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद के लजना हॉल में आए जहां पाकिस्तान तथा कुछ अन्य देशों से हिजरत कर के आने वाली महिलाओं ने सामूहिक मुलाकात का सौभाग्य पाया। महिलाओं में से अधिकतर का सम्बन्ध पाकिस्तान से था। इस के अतिरिक्त कोलोमिया, ऑस्ट्रिया और फ्रांस से आने वाली महिलाएं भी थीं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने पूछा कितनी संख्या है इस पर सदर साहिब लज्ना ने कहा कि 65 सदस्य मौजूद हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने प्रश्न करने की आज्ञा दी।

* पाकिस्तान से आई महिलाओं ने अपनी परिस्थितियों का वर्णन किया, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया , पति और बच्चों को पीछे छोड़ आई हैं। बच्चों तथा पति के पीछे क्यों छोड़ा गया है?

एक महिला ने कहा कि उसके पति और उसके बच्चे अभी भी पाकिस्तान में हैं। माता-पिता जर्मनी में हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : पिता और माता के प्यार को बच्चों के प्यार पर प्राथमिकता दी है।

कुछ महिलाओं ने अपनी समस्याओं और परेशानियों का ज़िक्र किया, इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि यह सब कुछ सोच कर आना था।

* शिक्षा प्राप्त करने वाली बच्चियों ने हुज़ूर अनवर की सेवा में दुआ का निवेदन किया। हुज़ूर अनवर ने बच्चियों से पूछा कि उनका विवाह हुआ है या नहीं? हुज़ूर अनवर ने फरमाया: मैं दुआ करता हूं कि जिनकी शादी नहीं हुई है उन की शादी हो जाए।

* हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सब मेम्बरात से पूछा कि क्या उन के स्थानीय लजना से सम्पर्क हैं? हुज़ूर अनवर ने सदर लजना जर्मनी को हिदायत फ़रमाई कि ऐसी मेम्बरात के पास स्थानीय लजना को हर सप्ताह जाना चाहिए और देखना चाहिए कैसे रहती हैं अहमदियत पर हैं भी या नहीं।

* एक बूढ़ी पाकिस्तानी महिला जो अपने बेटे के साथ रहती थी, पंजाबी में बात की और हुज़ूर अनवर की सेवा में दुआ के लिए कहा कि उसके भाई पाकिस्तान में हैं। तो हुज़ूर अनवर ने पंजाबी भाषा में फरमाया ठीक है, इधर बेटे हैं ना, बेटे कोल ही रहो।

*कोलम्बीन नस्ल की नई अहमदी महिला ने बताया कि वह 4 साल से जर्मनी में रहती है और उन्होंने जनवरी 2018 में बैअत की है और वह यहाँ अकेली हैं हुज़ूर अनवर ने कहा है कि बैअत के बाद, हमें अपने अन्दर परिवर्तन पैदा करना चाहिए और आगे भी बतानी चाहिए तो मैं अपने परिवार को कैसा बता सकती हूं ? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया जितना बता सकती हैं बताती रहें।

* एक महिला जिसे डाक्टर ने गर्भ कैंसर बताया है। उन्होंने दुआ का अनुरोध किया तो, हुज़ूर अनवर ने उनसे कहा कि वह कीमोथेरेपी के बाद सुच्ची बूटी का प्रयोग भी करें।

मुलाकात के अंत में, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दया करते हुए बच्चों के लिए चॉकलेट प्दरान किए। इस पर कुछ महिलाओं ने हुज़ूर अनवर के सामने तबर्रुक के लिए निवेदन किया। उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सदर साहिबा लजना को चाक्लेटस देते हुए कहा कि ये उन में बांट दें।

मुलाकात का यह कार्यक्रम 12 बजे अपने अंत को पहुंचा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ्तर लौट आए जहां पारिवारिक मुलाकातें शुरू हुईं।

**पारिवारिक मुलाकातें**

आज सुबह इस सत्र में पारिवारिक मुलाकातों में 40 परिवारों के 147 सदस्यों ने मुलाकात की। मुलाकात करने वाले ये परिवार जर्मनी में विभिन्न 34 जमाअतों और क्षेत्रों से आई थीं। इसके अलावा, पाकिस्तान से आने वाले एक परिवार ने भी मुलाकात का सौभाग्य पाया। कुछ लोग और परिवार चार से पांच सौ किलोमीटर लम्बा सफर कर के हुज़ूर के साथ मुलाकात के लिए पहुंची थी।

इन सभी परिवारों ने अपने प्यारे के साथ एक तस्वीर बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए छात्रों और छात्रों को चाकलेट प्रदान किए। कितनी ख़ुश नसीब हैं ये परिवार जिन्होंने अपने प्रिय आक़ा के साथ कुछ पल बिताए और फिर हुज़ूर अनवर से के मुबारक हाथों से तोहफे प्राप्त किए, जो उन के जीवन के लिए यादगार बन गए। कुछ बच्चे तो चॉकलेट खाने के बाद उस का कवर भी संभाल कर रखती हैं और कुछ बच्चे और छात्र अपना कलम संभाल कर रखते हैं कि यह उनके जीवन भर के लिए एक यादगार तोहफा है।

मुलाकातों का यह कार्यक्रम 2 बजे तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने तशरीफ लाकर नमाज़ जुहर तथा अस्र जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए। पिछले पहले हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ दफतर के कामों में व्यस्त रहे।

**पारिवारिक मुलाकात**

कार्यक्रम के अनुसार, 6:00 बजे, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल

अज़ीज़ ने अपने दफ्तर पधारे और परिवार के सदस्यों से मुलाकात शुरू हुई। आज शाम, 50 परिवारों के 173 लोगों को अपने आक़ा से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मुलाकात करने वाले ये परिवार 39 अलग-अलग जमाअतों से बैयतुस्सबूह पहुंचे थे। कुछ लोग और परिवार चार से पांच सौ किलोमीटर लम्बा सफर कर के हुज़ूर के साथ मुलाकात के लिए पहुंची थी। Bielefeld, Bocholt और Ahaus जमाअतों से आने वाले परिवार Chemnitz के शिविर से 300 कि.मी और 400 किलोमीटर की दूरी पर पहुंचे थे।

जर्मनी से आने वाले परिवार के सदस्यों के अलावा, बुर्किना फासो, घाना, बेनिन, कनाडा और ऑस्ट्रिया से आने वाले लोग और परिवार को भी मुलाकात का भी सौभाग्य मिला। मुलाकात करने वाले इन सभी लोगों और परिवारों के सदस्यों ने हज़ूर अनवर के साथ एक तस्वीर लेने का सौभाग्य प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को कलम प्रदान किए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट दिए। आज भी मुलाकात करने वाले परिवारों में बड़ी संख्या उन परिवारों की थी जो अपने जीवन में पहली बार हुज़ूर अनवर से मिल रहे थे।

**हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात के बाद प्रतिक्रिया**

एक दोस्त रिज़वान अहमद साहिब और उनके परिवार ने वर्णन किया कि यह हमारे जीवन में हुज़ूर अनवर के साथ हमारी पहली मुलाकात थी। हम पहले हुज़ूर अनवर को केवल टीवी पर देखा था। आज अपने बहुत क़रीब देखा और हुज़ूर अनवर के साथ बातें की हैं। हुज़ूर अनवर के चेहरे पर एक नूर था। एक रौशनी थी जिस से कमरा भरा हुआ था। आज हम बहुत भाग्यशाली हैं कि अपने आक़ा का दर्शन किया।

*अहमद लुकमान साहिब और उनके परिवार ने बताया कि हम अपने प्यारे आक़ा से मुलाकात के लिए बहुत दुआएं कीं कि अल्लाह तआला हमें सआदत नसीब फरमाए। आज हमारी प्रार्थनाएं स्वीकार हुई हैं और हमें मिलने का मौका मिला है। हमें इतनी ख़ुशी है कि हम वर्णन नहीं कर सकते हैं। ख़ुदा तआला सारे अहमदियों को हुज़ूर अनवर के साथ मुलाकात का सौभाग्य प्रदान करे।

* एक दोस्त भट्टी साहिब ने कहा कि मेरी हुज़ूर अनवर से यह दूसरी मुलाकात थी जब कि अन की पत्नी और बच्चों की पहली मुलाकात थी। उनकी पत्नी कहने लगीं कि हमारी यह पहली मुलाकात थी। हमें बहुत प्रसन्नता है कि अल्लाह तआला ने हमें यह मौका दिया था। मैं शब्दों में अपने विचार व्यक्त नहीं कर सकती। हुज़ूर अनवर के चेहरे पर हमारी आंखें नहीं ठहर रही थीं। मैं हुज़ूर अनवर को देखती जा रही थी। मेरा नज़र हटाने को दिल नहीं चाह रहा था। बस आज समय के ख़लीफा का चेहरा देखकर मैं और मेरे बच्चे बहुत ख़ुशी महसूस कर रहे हैं।

आज अपने जीवन में पहली बार मुलाकात करने वाले ये सभी लोग बहुत ख़ुश थे कि उनके जीवन में आज एक ऐसा दिन आया था कि उन्हें अपने प्यारे आक़ा के बेहद क़रीब से दीदार नसीब हुआ। अपने आक़ा के निकट बिताए गए कुछ क्षण उनके पूरे जीवन की पूंजी थे। उन में से प्रत्येक बरकतें समेटता हुआ बाहर आया, और उनके दर्द और परेशानी राहत तथा सुकून में तब्दील हो गए।

मुलाकातों का यह कार्यक्रम 8 बजे तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर पधारे ।

**आमीन का समारोह**

इस के बाद 8 बज कर 25 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ मस्जिद के हॉल में पधारे और कार्यक्रम के अनुसार आमीन का समारोह का आयोजन हुआ। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ निम्नलिखित 28 बच्चों और बच्चियों से कुरआन की एक-एक आयत सुनी और अंत में दुआ करवाई।

प्रिय औसाफ अहमद, हमज़ा उसद, ख़ुर्रम अहमद, अनस अहमद घुंमन, अब्दुल अहद काहलों, कामरान अहमद आबिद, आलियान अहमद, आमाल राना, आयान राना, हमज़ा विर्क, ज़ायान काशिफ नदीम, ख़ालिद महमूद, वालीद अहमद, सलमान अहमद फातेह, मुहम्मद तल्हा एहसान , फ़ौज़ान अहमद एजाज़, आयान ज़यान।

प्रिया अनूशा रहमान आराएँ, ईशाल बुशरा अहमद, अलीना महमूद, मलीहह शहज़ाद, सिदरतुल हलीम, काशफह चौधरी, अनासा नवीन विर्क, लुफ्ता मिर्ज़ा, युम्ना सलीम, बासमह तारिक, अलीज़ह महमूद।

अमीन के समारोह में भाग लेने वाले ये बच्चे और लड़कियां जर्मनी की विभिन्न 23 जमाअतों से आए थे। कुछ ने बहुत लंबा सफर किया। किएल की जमाअत से आने वाले बच्चे 670 कि.मी लंबा सफर कर के पहुंचे थे। आमीन का आयोजन के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए।

**5 सितम्बर 2018 (दिन बुधवार)**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने सुबह 5 बज कर 40 मिनट पर तशरीफ़ लाकर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर पधारे। सुब्ह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने दफ्तर की डाक, ख़त और रिपोर्ट देखे और अपने दस्ते मुबारक से निर्देश दिए। हुज़ूर अनवर दफ्तर के कामों में व्यस्त रहे।

**सामूहिक मुलाकात**

कार्यक्रम के अनुसार साढ़े 11 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ मस्जिद के हॉल में पधारे जहां दौरान साल विभिन्न माध्यमों से पाकिस्तान से जर्मनी पहुंचने वाले दोस्तों और युवाओं की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ से मुलाकात का कार्यक्रम था। उन युवाओं की कुल संख्या 370 थी और वे जर्मनी की 123 विभिन्न जमाअतों और क्षेत्रों से मिलने आए थे। आज अपने जीवन में पहली बार वह ख़लीफतुल के दर्शन से लाभांवित हो रहे।

ये सभी वे लोग थे जो अपने ही देश में क्रूर कानूनों और अपने ही देशवासियों के अत्याचार से सताए हुए थे और अपने घर बार और प्रिय संबंधियों को छोड़कर दुखों और कष्टों को अपने सीनों में दबाए हुए और अल्लाह तआला की ख़ुशी में ख़ुश रहते हुए हिजरत कर के इस देश में आबाद हुए थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने बारी बारी सभी को एक कर के हाथ मिलाने का सौभाग्य प्रदान किया और कई से पूछा कि वे कहां से आ रहे हैं और किस जमाअत से हैं? ये नौजवान भी अपने प्यारे आक़ा से मुलाकात करते हुए हुजूर अनवर से बात करने का सौभाग्य पाते रहे। आज वे कितने भाग्यशाली थे कि वे अपने प्रिय आक़ा के सानिध्य में कुछ क्षण बिताए। उनके दिल के दु:ख दूर हुए और दिल शान्ति से भर गए और वे अनन्त दुआओं के ख़ज़ाने ले कर यहां से विदा हुए। मुलाकात में भाग लेने के बाद, जब ये युवा मस्जिद के हॉल से बाहर आए, तो उनके दिल की एक अजीब आन्नद था। ज्यादातर की आंखें आँसओं से भरी हुई थीं।

**हुज़ूर अनवर से मिलने के बाद युवाओं की प्रतिक्रियांए**

* ज़िला बहावल नगर मज्लिस 116 मुराद के एक नौजवान ने अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहा, आज मेरी ख़ुशी का कोई ठिकाना नहीं है। मैंने हुज़ूर अनवर का दर्शन किया। मुझे अन्दर से शान्ति मिली? मुझे आज तक इस प्रकार की शांति नहीं मिली। जो सौभाग्य मुझे आज मिला है उस पर मैं जितना ख़ुदा तआला का शुक्र अदा करूं वह कम है।

* रब्वा से आने वाले एक नौजवान रो रहे थे। कहने लगे कि ये क्षण मेरे लिए अविश्वसनीय हैं। मुझे आज मानसिक शान्ति मिली है भावना मिली है। मैं बहुत भाग्यशाली हूं कि मैंने हुज़ूर अनवर को बहुत सामने से बहुत क़रीब से देखा है और अपना हाथ हुज़ूर अनवर के हाथ में मिलाया है।

लाहौर से आने वाले एक नौजवान रहने लगे कि मैं अपने परिवार में अकेला अहमदी हूं। जिस घड़ी का मैं अपने जीवन में लम्बे समय से इन्तेज़ार कर रहा था वह आज आ गई। फिर रोते हुए कहने लगे अब न मालूम दोबारा कब आए।

रब्वा से आने वाले एक दोस्त ने यह कहा कि मैं रब्वा से इसी उद्देश्य से निकला था मेरा उद्देश्य है ख़लीफतुल मसीह से मुलाकात करना था। वह लक्ष्य आज पूरा हो गया है, मुझे जीवन की परवाह नहीं है। मैंने अपनी मुराद पा ली।

* रब्वा से आने वाले एक युवक ने अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहा कि मैं लंबे समय से दुआएं कर रहा था कि मेरे जीवन में वह समय कब आएगा जब मैं जब मैं हुज़ूर अनवर से मिलूंगा। आज मैं बहुत भाग्यशाली व्यक्ति हूं कि अल्लाह के फज़्ल से वह दिन आ गया और मैंने हुज़ूर अनवर से हाथ मिलाया। हुज़ूर का दर्शन किया और हुज़ूर से बात भी की।

* सियालकोट से आने वाले एक नौजवान कहने लगे कि मुझे मुलाकात के लिए एक ख़्वाब आई थी। इस समय, मेरी इस प्रकार की अवस्था है कि मैं वर्णन नहीं कर सकत। मुलाकात से पहले, मैंने अपने बच्चों को फोन से कहा कि मैं आज हुज़ूर से

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 13 December 2018 Issue No. 50

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

मिल रहा हूं तो उन्होंने यही कहा कि हुज़ूर की सेवा में दुआ के लिए कहें कि अल्लाह तआला हमें नेक बनाए और धर्म की सेवा की तौफीक प्रदान करे।

* फैसलाबाद से आने वाले एक नौजवान ने कहा कि हम तो हुज़ूर के दर्शन के लिए तरसे हुए थे। आज, प्रिय आक़ा से मुलाकात का का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हुज़ूर को बहुत निकट से देखा और बरसों की प्यास बुझी।

* रब्वा से आने वाला एक नौजवान, जो पेशे से इंजीनियर हैं, ने कहा कि हुज़ूर अनवर से मिलने के बाद मुझे लगा कि मैंने इस दुनिया से कट कर दूसरी दुनिया में चला गया हूं। एक ख़्वाब था जो मैंने देखा था। मैंने तो आज जन्नत का दृश्य देखा है।

* गुजरांवाला से आने वाले एक युवा ने कहा कि मैंने अपने जीवन में यह भी नहीं सोचा था कि मैं हुज़ूर अनवर से मेरे सामने मिलूंगा। आज मैं हुज़ूर अनवर की स्थिति को देखकर ख़ुश हूं, लेकिन यह एक संबंध होने का मौका था। मुझे लगता है कि यह मेरे जीवन में बहुत भाग्यशाली है।

* नारोवाल से आने वाले युवा कहने लगे कि अभी मुझे होश नहीं है मेरे दिल की धड़कन तेज़ है मैं वर्णन नहीं कर सकता।

* कराची औरंगी टाउन से आने वाले एक युवा ने कहा कि आज मैं बहुत ख़ुश किस्मत व्यक्ति हूं। ख़ुदा तआला ने मुझे हुज़ूर अनवर से मिलने और हाथ मिलाने का अवसर दिया। मुझे लगता था कि शायद मेरे जीवन में ख़लीफतुल मसीह के साथ मुलाकात मेरे जीवन में नहीं है। लेकिन आज मेरे ख़ुशी का अंत नहीं है।

* रब्वा से आने वाले एक युवक ने वर्णन किया कि जीवन की केवल एक ही इच्छा थी जो आज पूरी हो गई। ख़ुदा ने जो नूर दिखाया वह कमाल का था। मैंने एक नूर देखा है। मैं इस से अधिक वर्णन नहीं कर सकता।* मंडी बहाउद्दीन के एक युवा ने कहा कि मेरे दिल की इच्छा थी और मैं हमेशा दुआ करता था कि ख़ुदा तआला यह मुबारक दिन लाया और मैं हुज़ूर अनवर से मिला। ख़ुदा तआला ने आज मेरी इच्छा पूरी की है और मेरी दुआ स्वीकार कर ली गई है। मैंने बहुत बरकतें पाई हैं।

* रब्वा से आने वाले एक ख़ुद्दाम ने बताया कि हम रब्बा में कर्तव्यों का पालन कर रहे हैं। आज, ख़ुदा ने मुझ पर एक बरकत और फज़्ल नाज़िल किया है जो मैं कभी वर्णन नहीं कर सकता। मेरे जीवन में एक ही इच्छा थी कि हुज़ूर अनवर से मुलाकात हो वह आज इस मुबारक दिन में पूरी हो गई है।

* सांगला हिल से आने वाले एक ख़ादिम ने कहा, मैं बहुत भाग्यशाली हूं। आज हुज़ूर अनवर से मुलाकात की मेरी इच्छा पूरी हो गई।

* रब्वा से आने वाला एक युवा लगातार रो रहा था। कहने लगा इस समय मुझ से बात करना मुश्किल था। मैंने अपने जीवन में पहली बार हुज़ूर अनवर को देखा है और हुज़ूर के साथ हात मिलाया है। मैं फिर से मिलना चाहता हूँ। यह कहकर, उसने फिर से रोना शुरू कर दिया।

* कुनरी (सिंध) से आने वाले एक ख़ादिम ने कहा कि मेरे पास कुछ भी वर्णन करने के लिए शब्द नहीं हैं। मैंने अपने जीवन में पहली बार हुज़ूर से मुलाकात की। मैं कुछ और वर्णन नहीं सकता।

रब्वा से आने वाले एक ख़ादिम ने कहा कि इस समय मेरा दिल ख़ुशी से रो रहा है। मैंने हुज़ूर का दर्शन किया है। मैंने हुज़ूर से हाथ मिलाया है। हुज़ूर ने मुझ से पूछा कि एक ही बेटा है। मैं आज बहुत ख़ुश हूँ।

अधिकांश युवाओं ने व्यक्त किया कि हम बहुत ख़ुश हैं कि हमारे पास वर्णन करने के लिए शब्द नहीं हैं। हमारे दिल आराम से भरे हुए हैं। हमें वह कुछ पा मिला जिस के बारे में हम ने कभी सोचा नहीं था। आज मुलाकात करने वाले उन दोस्तों और युवाओं ने अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर बनवाने की सआदत भी पाई। यह मुलाकात का कार्यक्रम लगभग दो बजे तक चला।

**पारिवारिक मुलाकात**

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ्तर पधारे जहां कार्यक्रम के अनुसार परिवारों की मुलाकातें शुरू हुई। आज सुबह इस सत्र में 31 परिवारों के 127 लोगों ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाकात की सआदत पाई। मुलाकात करने वाली ये परिवार जर्मनी की विभिन्न जमाअतों से लंबे सफर तय करके बैयतुस्सुबूह फरनकफरट पहुंचे थे। आज जर्मनी के अलावा निम्नलिखित विभिन्न देशों से आने वाले दोस्तों और परिवार ने भी अपने प्यारे आक़ा से मुलाकात की सआदत पाई। Chad, लाटयूया, ऑस्ट्रिया, ग्रीस, पाकिस्तान, यूगांडा, सेनेगल, तंजानिया, केन्या, पुर्तगाल, पोलैंड, लिथुआनिया और बोर्कीनाफ़ासो।

मुलाकात करने वाले सभी परविारों ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर लेने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए स्कूलों और कॉलेजों में शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को कलम प्रदान किए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट दिए। दोपहर तक मुलाकातों का यह कार्यक्रम जारी रहा। बाद में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने आवासीय भाग में पधारे। 2 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने तशरीफ लाकर नमाज़ ज़ुहर तथा असर जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए। पिछले पहर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला दफतर के मामलों में व्यस्त रहे।

**पारिवारिक मुलाकात**

कार्यक्रम के अनुसार 6 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ्तर आए और परिवारों की मुलाकातों का कार्यक्रम शुरू हुआ। आज शाम इस कार्यक्रम में 49 परिवारों के 164 लोग ने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाकात का सौभाग्य पाया। इस मुलाकात में आने वाले परिवार 35 विभिन्न शहरों और जमाअतों से मुलाकात के लिए आए थे। इन में से कुछ परिवार लंबा सफर कर के आए थे और अपने प्रिय आक़ा से मिलने आए थे। विशेष रूप से हेमबर्ग से आने वाली 500 किलोमीटर और बर्लिन से आने वाली 550 किलोमीटर की दूरी तय करके पहुंची थीं।

जर्मनी के अलावा विदेशों पाकिस्तान, नाइजीरिया, फजी और UAE से आने वाले परिवार ने भी मुलाकात की सआदत पाई। इन सभी दोस्तों और परिवार ने जहां अपने प्यारे आक़ा से मुलाकात का सौभाग्य पाया वहाँ प्रत्येक इन बरकतों वाले क्षणों से अपार बरकतें समेटे हुए बाहर आया। बीमारों ने उनके स्वास्थ्य के लिए दुआएं प्राप्त कीं। विभिन्न परेशानियों और समस्याओं में घिरे हुए लोगों ने अपनी पीड़ा दूर होने के लिए दुआ का निवेदन किया और संतोषजनक दिल पाकर मुस्कुराते हुए चेहरों के साथ बाहर निकले। छात्रों और छात्रों ने अपने अध्ययन और परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करने के लिए अपने प्यारे आक़ा से दुआएं प्राप्त कीं। हर किसी ने अपने प्यारे आक़ा की दुआएं से हिस्सा पाया। हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए स्कूलों और कॉलेजों में शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को कलम प्रदान किए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट दिए। मुलाकातों का यह कार्यक्रम 8 से 20 मिनट तक जारी रहा।

**आमीन का समारोह**

इसके बाद हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद हॉल में पधारे और कार्यक्रम के अनुसार आमीन का समारोह का आयोजन हुआ। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ दया करते हुए 30 बच्चों और बच्चियों से कुरआन करीम की एक-एक आयत सुनी और अंत में दुआ करवाई।

प्रिय दानिश इनाम, लबीक अहमद बाजवा, आकिल अहमद अरक़म, अंसर अहमद जावेद, मिर्ज़ा शायान अहमद आसिफ, फ़राज़ अहमद बट, फारान ताहिर, अदयान अहमद, सरमद अहमद भट्टी, अरमान सालिक, हाशिम जमील, राना सुलैमान अहमद, मुहम्मद फरीद।

प्रिया तहमीना मिर्ज़ा अहमद मनीफह ज़फर, अनीकह अहमद, अंजलि कुमार, हिबह अतहर, मीरब बट, सलमानह मन्हास, आनिया अहमद अलीज़ह सोफिया अहमद, अलीशा अहमद, हानिया अहमद, नासरत इरफान, मनाहल तसव्वुर बट। एवान अजहर, अमतुश्शाफी भट्टी, अनाया बट, सबीकह अहमद।

आमीन के आयोजन के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा कर के पढ़ाई नमाज़ों के अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए।

(शेष.....)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad